



Prabha

October 2021 | Issue 29

प्रभा

The Prabha Khaitan Foundation Chronicle

The world is slowly returning to normal and so are we. In this edition of *Prabha*, we bring to you some of the sessions organised by **Prabha Khaitan Foundation** that were conducted in person, instead of virtually



Pg 4-13

INSIDE

THE MAN
BEHIND THE HERO

16



THE PAATHSHALA
FOR INSPIRATION

22



THE UNTOLD
STORY

27



OF MOTHERS
AND MEMORIES

28



INSIDE

ADVOCACY FOR
AFGHAN RIGHTS
15

CELEBRATING KHUSRO
18

SMALL TOWN BONDS
21

CAPTURING PLACES
25

CHALLENGES OF A
MYSTERY WRITER
30

DREAMS OVER
AMBITIONS
32

EMBRACING
SINGLEDOM
33

GUIDING THE GURUS
34

PROTECTOR OF THE
PLANET
35

DOGGY TALES
38

TEACHER'S DAY
CONTEST
39



Prabha
खैतान

MANISHA JAIN
Communications & Branding Chief,
Prabha Khaitan Foundation



Face-to-Face

The world is gradually coming back to life, albeit masked and cautious. After over a year of virtual interactions, **Prabha Khaitan Foundation** has started holding physical sessions across the country. Our in-person debut in Chennai and our regular sessions in Kolkata, Delhi, Meerut, Amritsar and Gurugram are small steps to get back to our pre-pandemic initiatives, in an effort to promote Indian art, culture and literature worldwide.

Up close interactions with personalities in a physical space has always been a treasured experience amongst our audience, but the pandemic is still a reality and the Foundation, which takes the safety of its audience and guests very seriously, makes sure that all safety protocols are adhered to during these sessions.

To celebrate Teachers' Day, the Foundation's latest initiative, **Muskaan**, organised a pan-India online contest for children, which received an overwhelming response from across the country, with more than a thousand entries. We have showcased a few entries from this contest in this edition of *Prabha*.

You can view the physical sessions along with the virtual ones with a simple click on the red play button in our digital pages.

We hope you enjoy reading this edition and we welcome your feedback and suggestions, as always.

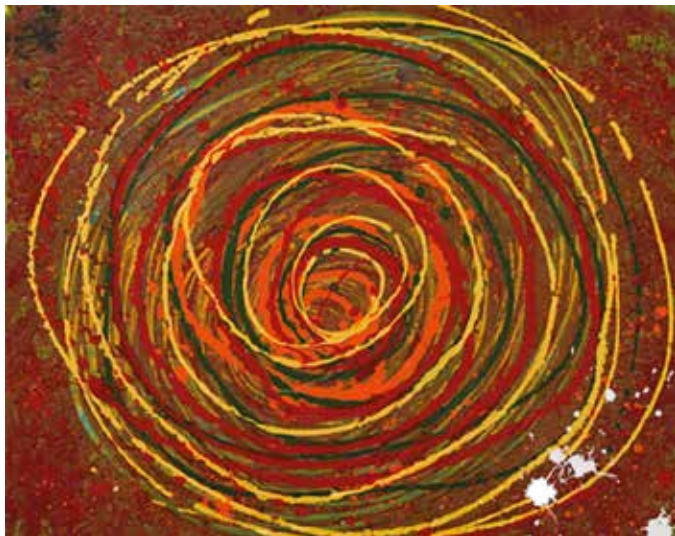
Wishing you and your loved ones a joyous and safe festive season ahead.

Happy reading!

Manisha Jain

Disclaimer: The views and opinions expressed in the articles are those of the authors. They do not reflect the opinions or views of the Foundation or its members.

[SNAPSHOT OF THE MONTH]



Painting titled 'Swirl in Chaos' by **Ehsaas**
Woman of Ahmedabad Priyanshi Patel

Happy Birthday

Prabha WISHES **EHSAA**S WOMEN BORN IN OCTOBER

2nd October



Titiksha Shah

4th October



Vedula
Ramalakshmi

9th October



Piali Ray

10th October



Sharmita
Bhinder

12th October



Unnati Singh

12th October



Ruhi Walia Syal

13th October



Deepa Mishra

15th October



Sunita
Shekhawat

16th October



Ramanjit Grover

20th October



Anvita Pradhan

26th October



Monica
Bhagwagar

27th October



Shrishti Trivedi

30th October



Gouri Basu

In this edition of *Prabha*, we have showcased some of the physical sessions that the Foundation has organised. The Foundation looks forward to conducting more physical sessions of various events in more cities in the coming months.

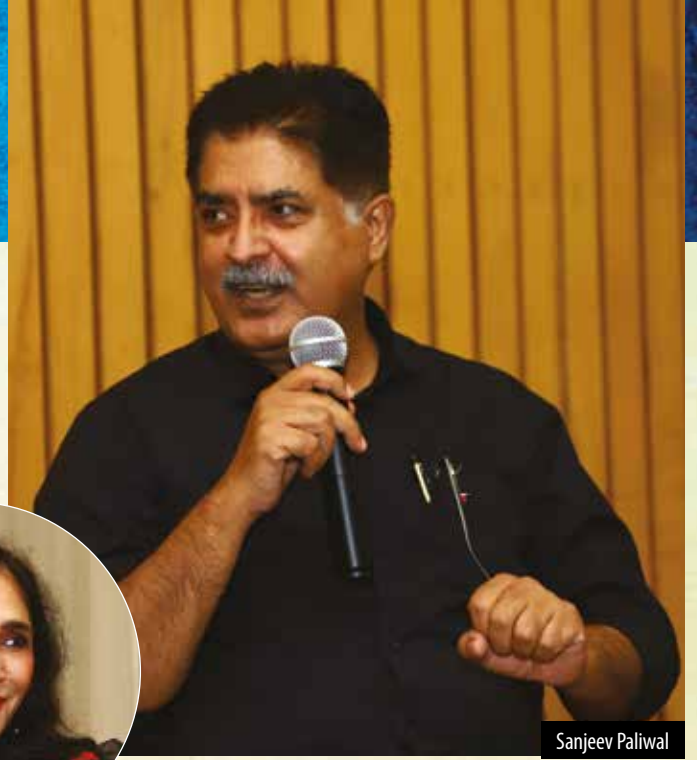


पिशाच आज के समाज का दस्तावेज है: संजीव पालीवाल

हिंदुस्तान में इस तरह का क्राइम फिक्शन कोई नहीं लिख रहा है, जबकि दुनिया भर में रोमांस और क्राइम सबसे ज्यादा लिखा जा रहा है। तो मैं इस खाली क्षेत्र में आ गया।" प्रभा खेतान फाउंडेशन और अहसास वूमेन की ओर से आयोजित कलम दिल्ली में अपराध कथा लेखक संजीव पालीवाल ने यह बात कही। आयोजकों की ओर से उनका स्वागत और धन्यवाद अर्चना डालमिया ने किया। फाउंडेशन की गतिविधियों की चर्चा करते हुए डालमिया ने कहा कि 'अपनी भाषा, अपने लोग' वह मौलिक विचार है, जिसे बढ़ावा देने के लिए फाउंडेशन कलम और ऐसे ही दूसरे कई कार्यक्रम आयोजित करता है। एक मुलाकात विशेष, लफ्ज, आखर, पोथी, सुर और साज, द राइट सर्कल और किताब ऐसे ही कुछ नाम हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य सम्मानित लेखकों, कलाकारों और साहित्य प्रेमियों को एक ऐसा मंच मुहैया कराना है, जहां सभी एक-दूसरे से सीधे जुड़ सकें, संवाद कर सकें। अतिथि वक्ता पालीवाल का परिचय देते हुए उन्होंने कहा कि आप एक चर्चित एंकर, स्टोरी टेलर और पत्रकार के रूप में विख्यात होने के बाद अब हिंदी के बेस्टसेलर उपन्यासकार के रूप में धूम मचाए हुए हैं। आपका नया उपन्यास पिशाच लगातार रिकॉर्ड बिक्री का कीर्तिमान बनाए हुए है। अमर उजाला, इंडिया टुडे, हिंदुस्तान, न्यूज-18, आजतक.इन जैसे कई प्रमुख प्रकाशनों और डिजिटल चैनलों पर इसकी चर्चा लगातार जारी है। आपका पहला उपन्यास नैना पिछले साल 2020 में ही रिलीज हुआ था, और उसने भी व्यापक प्रशंसा बटोरी थी। आगे की बातचीत के लिए उन्होंने अहसास वूमेन दिल्ली की सहयोगी नीलिमा डालमिया आधार को बुलाया।

आधार ने पहला सवाल पिशाच: एक फेसबुक पोस्ट, कई हाई-प्रोफाइल मर्डर के नाम और उसके कथानक को लेकर पूछा। पालीवाल का उत्तर था, "पिशाच नाम सामने आते ही एक खौफनाक सी तस्वीर दिमाग में उभरती है। बचपन में भी बड़े-बूढ़े बच्चों को यह कह कर डराते थे कि इधर मत जाना, उधर मत जाना, पिशाच आ जाएगा। यह समाज में छिपे बैठे पिशाचों की कहानी है। ऐसी घटनाएं हम अपने समाज में सुनते चले आते हैं, पर वह खुलकर सामने नहीं आतीं, दबा दी जाती हैं। कुछ रसूख की वजह से, कुछ ताकत के दम पर और कुछ शर्मिंदगी की वजह से। ये कहानियां दब कर न रह जाएं, कम से कम आज के दौर में सामने आएँ। पिशाच आज के समाज का दस्तावेज है।" नैना के बाद आपने पिशाच के माध्यम से आपने हिंदी साहित्य में क्राइम थ्रिलर राइटर की जगह पेटेंट करा ली है। क्या पिशाच को पढ़ने के लिए नैना को पढ़ना जरूरी है? के उत्तर में पालीवाल का उत्तर था, "अगर पढ़ेंगे तो आपको ज्यादा आनंद आएगा। पर ऐसा नहीं है कि नैना को पढ़ना पिशाच को पढ़ने के लिए जरूरी है। नैना मेरी पहली कोशिश थी। वह न्यूज रूम की स्टोरी थी। हमारे एंकर स्टार हैं। ऐसे ही एक दिन दिमाग में आया कि अगर किसी एंकर की हत्या हो जाए तो क्या होगा? चैनल उस पर कैसे रिएक्ट करेंगे? कैसे जांच होगी। नैना के बाद मैं कुछ और लिख रहा था। पिशाच मेरे दिमाग में नहीं था। पर एक दिन एक फेसबुक पोस्ट देखकर मैं हिल गया। बाद में मैंने उस पर नॉवेल लिखने की सोचा।" आधार ने इसके बाद फेसबुक पोस्ट से जुड़ा अपना एक अनुभव बताया।

पिशाच उपन्यास के मुख्य किरदार काली के लाइव साक्षात्कार वाले दृश्य को कैसे लिखा? के उत्तर में पालीवाल ने बताया कि उनके पास न्यूज रूम के दशकों के अनुभव हैं। वह पहले भी 'जिंदगी लाइव' नामक टीवी कार्यक्रम के दौरान ऐसे अनुभवों से गुजर चुके थे, जिसे एंकर ऋचा अनिरुद्ध प्रस्तुत करती थीं। नैना और पिशाच छोटे परदे, ओटीटी प्लेटफॉर्म पर कब आ रहे हैं? के उत्तर में पालीवाल ने यह माना कि हां, मुंबई से कई प्रोडक्शन हाउस ने नैना और कई डायरेक्टर, प्रोड्यूसर ने



Sanjeev Paliwal



Neelima Dalmia Adhar

उनसे पिशाच पर सीरीज बनाने के लिए संपर्क किया है। भारतीय समाज की व्यवस्था ऐसी है कि इसमें सीरियल किलर होना मुश्किल है? के सवाल पर पालीवाल ने इस बात को इनकार किया। उनका कहना था भले ही ऐसी घटनाएं कम हों, पर भारत में भी सीरियल किलिंग की घटना हो रही है। उन्होंने नोएडा, पंजाब और केरल की घटनाओं का हवाला देते हुए कहा कि हमारे यहां अपराध मनोविज्ञान पर काम नहीं होता। इसकी वजह शायद हमारे समाज में आपराधिक घटनाओं की अधिकता है। हमारी सामाजिक खाई, गरीबी भी ऐसी बातों को बाहर नहीं आने देता। जब तक मध्यवर्ग पर न आ जाए, तब तक समाज जागृत नहीं होता। इस दौरान सौम्या



Santosh Shekhar



(L-R) Karuna Goenka, Archana Dalmia and Anantmala Potdar

विश्वनाथ हत्याकांड और निर्भया कांड का उल्लेख हुआ और पालीवाल ने कहा कि अपराध को लेकर भारतीय समाज बहुत कम ही आक्रोशित होता है। पालीवाल ने बताया कि मैं आज में जीता हूं। मेरा पाठक वर्ग अगले तीस साल तक मेरे साथ रहे, मैं उनके लिए लिख रहा हूं। कई बार मैं अपनी बेटी से भी पूछता हूं। इसमें आज का सोशल मीडिया, पॉलिटिक्स, क्राइम और युवा वर्ग है। इसमें आज का समाज, आज की नारी आदि भी इसमें दिखाई देते हैं। मनोरंजन इसका मकसद है। इसकी भाषा आज की है। यह पूरी तरह फिक्शन है। मेरी जिंदगी न्यूज है। इसका आधार, अनुभव यही है। पालीवाल ने पिशाच का एक अंश भी पढ़ कर सुनाया।

कलम दिल्ली के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। दिनेश नंदिनी रामकृष्ण डालमिया फाउंडेशन, अहसास वूमेन और मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण का भी सहयोग मिला।



Nirmala Sitharaman

A Historian's Job is to Illuminate the Records



Vikram Sampath

Vikram Sampath's contributions to the literary world, historical research and music are well-known. He has written books such as *Splendours of Royal Mysore*, *My Name is Gauhar Jaan: The Life and Times of a Musician* and *Savarkar: Echoes From A Forgotten Past*. The trained Carnatic vocalist also set up the Archive of Indian Music, which is said to be India's first digital sound repository for vintage recordings. As a part of **Kitaab, Prabha Khaitan Foundation** organised a panel session in Delhi to discuss of Sampath's latest book, *Savarkar: A Contested Legacy*. In conversation with the historian were Union finance minister Nirmala Sitharaman, the principal economic adviser at the ministry of finance Sanjeev Sanyal and noted columnist Shubhrastha.



Shubhrastha



Sanjeev Sanyal

"What strikes me about Sampath is the consistency with which he does rigorous research," said Sitharaman. "Many of us are tempted to join conversations about history and historical figures without first having access to solid, primary source-based research. V.D. Savarkar is one such figure, about whom there is endless debate, but the



(L-R) Shinjini Kulkarni, Neelima Dalmia Adhar, Anantmala Potdar, Archana Dalmia, Aradhana Pradhan and Shazia Ilmi



Ryina Maini



Sonal Mansingh

conversations must be informed."

"*Savarkar: A Contested Legacy* is the last word on the figure in many ways," said Sanyal. "It is scintillating. It is okay to have debates about the past. On television we see people debating things that happened yesterday; why shouldn't historians debate what happened 2000 years ago? What matters is whether those debates are based on fact. Unfortunately, in India especially, very few of these debates are based on primary evidence."

"It took me five long years to put together the two volumes on Savarkar," revealed Sampath. "Whether you like or dislike a historical figure, there should not be a 'cancel culture' against a proper discussion about that person. Every year in India we re-evaluate figures of the past, be it Gandhiji or Pandit Nehru. And yet, the last comprehensive biography that was written on Savarkar was back in the 1960s, by Dhananjay Keer. Nobody thought it important to re-evaluate Savarkar. Historians in India have to grapple with the landmines of 'no-go' subjects and make objective assessments. For those wishing to be the historians of tomorrow, my advice would be to be ready to put in that hard work."

What about the anathema against Savarkar? "Some of



Jaya Jaitly

biggest backlash Savarkar received for his work against caste discrimination was from the Hindu orthodoxy," revealed Sampath. "In the 1930s, he set up India's first sit café where Hindus of all castes could sit together and eat, at a time when even Brahmins of different denominations didn't dine together.

In his pilot project in Ratnagiri, untouchability was abolished so that children of all castes could study together."

Whether you like or dislike a historical figure, there should not be a 'cancel culture' against a proper discussion about that person... Historians in India have to grapple with the landmines of 'no-go' subjects and make objective assessments. For those wishing to be the historians of tomorrow, my advice would be to be ready to put in that hard work

"Many problems stem from not only the opponents of Savarkar but also his proponents," continued Sampath. "Even those who eulogise his views have not read his actual views in the original or bothered to engage with his thoughts. A historian's job is to illuminate the records and ensure that a discerning reader can make up her mind as to how she would like to evaluate Savarkar or any figure." "Sampath's books will inform the next generation of debates on Savarkar in a totally different way," said Sanyal. "The young are subversive. If you place an argument before them, they will question it and poke at it."

This session of Kitaab is presented by Shree Cement Ltd, in association with Penguin Random House and Ehsaas Women of NCR



Subodh Sarkar

Subodh Sarkar's scholarship and his contribution to the world of letters are no secret. He is a Bengali poet, a writer, a translator, an editor and a reader in English literature. His body of work is formidable—he has written over 30 books comprising poetry, translation and non-fiction. It is no surprise that he has been conferred the prestigious Sahitya Akademi Award. **Prabha Khaitan Foundation**, as a part of its **Aakhar** Kolkata initiative, organised a talk with the celebrated poet, who was introduced to the audience by thespian and adviser, Bengali Language, Theatre and Film Programmes, **PKF**, Soumitra Mitra. In conversation with Sarkar was Sibasis Mukhopadhyay.

Mukhopadhyay began the session by recalling some of Sarkar's seminal works in Bengali literature, namely his ode to Sourav Ganguly, *Behalar Chheleta*, the revolutionary *Manipurer Ma*, and *Rupam Ke Ekta Chakri Din*. He also remarked upon the transformations that have occurred in Sarkar's journey as a poet and how his passionate, revolutionary poetry has given way to more lyrical verses of love.

Sarkar highlighted the value of different languages in India. "The Foundation has been doing commendable work in organising programmes like this one in different languages. The relative lack of interest in different languages in our country poses a fight for us. At *Bhashanagar*, the Bengali magazine with which I've worked for over 30 years, we work on Indian languages." The poet went on to read from some of his poems, including the lyrical *Jyotsna Niye Ekta Kichhu Koro and Bati*. "Even I had not anticipated, in my decades of writing a certain kind of firebrand poetry, that my lyrical journey



Sibasis Mukhopadhyay

A Journey from Fire to the Heart of Love

would take on this new form," said Sarkar.

Does being in love have a role to play in the writing of expressive lines about the emotion? "Without the ground, the trees, the birds, there can be no reflection of moonlight," was Sarkar's answer. "Everyone present here today has their own unique sources of moonlight.

The *jyotsna* I speak of is like a chorus. Love is essential to existence. It can take on any form, and can be towards anything."

Sarkar commented on the influence that poets like William Blake, Rabindranath Tagore and Shakti Chattopadhyay have had on him. "The impact that poems written 230 years ago had on me is comparable to the impact that Shakti Chattopadhyay has had on me. None can be discounted; to do so is to be dishonest with oneself." To Mukhopadhyay's queries about the tasteful expressions of eroticism in his poetry, Sarkar reflected on the rich history of eroticism in Indian poetry over centuries, be it in the works of Jayadeva or in the *Vaishnav Padabali*. "The trolling a writer faces nowadays on social media, however, is unfortunate,"



Chinmoy Guha



Soumitra Mitra



Tanmay Chakraborty

remarked Sarkar. "It gets in the way of the poet's flow of writing."

An interaction with the audience followed, during which Sarkar left his listeners with a beautiful thought. "Many of you must have seen the young flute-playing man in the vicinity of Oxford Bookstore on Park Street. I have spoken to him several times. To me, he seems like a universal lover, who plays the flute for the whole world. When I look at him, I feel like Lord Krishna is right there on Park Street."

Aakhar Kolkata is presented by Shree Cement Ltd, in association with Anandabazar Patrika and Purba Paschim

मैं आज के दौर की कहानी लिख रहा: संजीव पालीवाल



Sanjeev Paliwal

प्रभा खेतान फाउंडेशन की ओर से आयोजित कलम

अमृतसर में अपराध-कथा लेखक संजीव पालीवाल शामिल हुए। अहसास वूमेन की ओर से उनका परिचय और संवाद का दायित्व जसमीत नैय्यर ने निभाया। उन्होंने बताया कि पालीवाल से नैना लिखने के बाद ही मुलाकात होनी तय थी, पर कोरोना के चलते उनसे बातचीत नहीं हो पाई और आप जूम पर बात करने के लिए राजी नहीं थे, इसलिए यह बातचीत का डबल डोज है। पालीवाल का कहना था कि मैं लोगों से सीधे रूबरू होना चाहता था। मेरे दोनों ही उपन्यास न्यूज टीवी की दुनिया के हैं। पहला उपन्यास नैना, एक मशहूर एंकर की हत्या के बहाने मैंने लोगों को यह बताने की कोशिश की कि हम न्यूज चैनल में काम कैसे करते हैं। टीवी सीरीज और फिल्मों में जैसा न्यूज रूम दिखाया जाता है वह बिल्कुल झूठ होता है। हम एक अलग तरीके से काम करते हैं। नैना एक छोटे से शहर से आई हुई लड़की है। उसका पति न्यूज चैनल में काम करता है। वह काम नहीं करना चाहती पर बाद में पति के कहने पर वह चैनल में काम करने लगती है। वह



Jasmit Nayyar

उठेगा। यह एक सच्चाई है। सुरेंद्र मोहन पाठक से जुड़े सवाल पर पालीवाल ने बताया कि बचपन में ही मैं उनका नॉवेल पढ़ने लगा। उनका एक किरदार है सुनील कुमार चक्रवर्ती, जो पत्रकार था। पाठक साहब ने उसकी जिंदगी का ऐसा शानदार फलसफा खींचा कि उसी से प्रेरित होकर मैं पत्रकार बना। पालीवाल ने बचपन का अपना किस्सा सुनाया कि किस तरह मनोहर कहानियां, सत्यकथा पढ़ने के लिए उन्हें मार पड़ी थी।

पालीवाल ने बताया कि नैना के बाद मैं कुछ और लिख रहा था। पिशाच मैं नहीं लिख रहा था। अचानक मेरे सामने एक फेसबुक पोस्ट गुजरी। जिसे पढ़ने के बाद एक आइडिया मेरे दिमाग में आया। इसकी कहानी देश के एक जाने-माने वामपंथी कवि के अचानक हुए मर्डर पर आधारित थी, जो 2014 के बाद लेफ्ट से राइट में आ गया था। जैसा कि ऐसे मामलों में अक्सर होता है चैनल इस खबर के पीछे पड़ गए। सभी चैनल अपने-अपने हिसाब से इसकी कहानी कहने लगे हैं। हिंदू, मुसलमान से लेकर आतंकवाद, पाकिस्तान तक की बात की जाती है। इस बीच इसी तरह के और भी मर्डर होने लगे हैं। मर्डर एक तरह का क्राइम सेट बनाता है। सीन क्रिएट करता है और दीवाल पर लिख देता है 'पिशाच'। उपन्यास के किरदारों से जुड़े सवाल पर पालीवाल ने कहा कि अपने ढेर सारे किरदारों में मैं ही हूँ। इन्स्पेक्टर समर प्रताप सिंह के किरदार में भी मैं ही हूँ। काली के किरदार की चर्चा करते हुए पालीवाल ने कहा कि काली वह है जो कड़ियों के साथ हुए जुल्म का बदला लेती है।

पिशाच आज के दौर की कहानी है। इसमें टीवी चैनल भी है, सोशल मीडिया भी और यह भी कि कोई सोशल मीडिया के इस्तेमाल से हमें कैसे प्रभावित करता है। हर समय सोशल मीडिया पर लोग लगे हुए हैं, कुछ न कुछ वहां हो रहा है। इसी तरह टीवी पर भी कुछ न कुछ घट रहा होता है। यह हमारे अंदर के जो द्वंद्व हैं, समाज में जो घट रहा है, उसकी कहानी है।

मैं महिला और पुरुष में भेद नहीं करता। मैं लिखते समय किसी को जज नहीं करता। नैना और पिशाच में कुछ भी ब्लैक एंड व्हाइट नहीं है। जिंदगी में ग्रे भी होता है। मैं किसी को जज करने वाला कौन हूँ। अपने उपन्यासकार बनने का जिक्र करते हुए पालीवाल ने कहा कि मैं सालों से उपन्यास लिखना चाहता था, लेकिन नैना से



Praneet Bubber



Preeti Gill



Ramanjit Grover



Sarbjot Singh Behl



Sheetal Khanna



Sonakshi Kundra

एक कामयाब एंकर बन जाती है। उसके कई लोगों से रिलेशन बनते हैं और एक दिन उसका मर्डर हो जाता है।

नैना में एक चैनल है तो पिशाच में दो चैनल हैं। एक राइट है और एक लेफ्ट या सेंटरिस्ट है। ये दोनों चैनल कैसे काम करते हैं इसे मैंने लिखा है। नैय्यर ने नैना के किरदार के बीच चैनल की टीआरपी से जुड़ा सवाल पूछा। पालीवाल का कहना था कि आज का टीवी चैनल ऐसे ही काम करता है। अगर आपके घर के भीतर भी कोई घटना घट जाती है तो चैनल बिना यह सोचे समझे कि आपके परिवार पर क्या घट रही है, वह भीतर की सारी कहानी खोल कर रख देगा। मैंने नैना में यही लिखा है कि आज हमारी जाती जिंदगी भी हमारी अपनी नहीं रह जाती। यहां तक कि उसका अपना चैनल भी इस द्वंद्व में फंस जाता है कि इसकी खबर को दिखाएं या नहीं दिखाएं, दिखाएं तो कैसे दिखाएं। आज चैनल हर सेकंड टीआरपी की रेस में हैं। पिशाच में मैंने एक जगह यही लिखा है कि हम जितना नीचे गिरेंगे, हमारा चैनल उतना ही ऊपर

पहले मैं अंत न सूझने के चलते लिख नहीं पाया। आरुषि हत्याकांड पर भी मैं उपन्यास लिखना चाहता था, पर अंत नहीं सूझा। लेकिन अब दो उपन्यास लिखने के बाद मैं इसे लिख सकता हूँ। अब मैं उपन्यास का एंड पहले सोचता हूँ। इस बातचीत के दौरान पालीवाल की ने अपने शायरी प्रेम के बारे में भी बताया और इन्ने इंशा की नज़्म फर्ज करो और चर्चित पंजाबी कवि सुरजीत पातर की कविता ये मेला है भी सुनाया। पालीवाल ने इस दौरान श्रोताओं के सवाल के उत्तर भी दिए। उन्होंने कहा कि मेरा मुकाबला खुद मुझसे है। उन्होंने कहा कि मैं डेनियल सिल्वा जैसा कैरेक्टर क्रिएट करना चाहता हूँ। कार्यक्रम में अहसास वूमेन से जुड़ीं प्रणीत बब्बर, सोनाक्षी कुंद्रा, रमनजीत ग़ोवर, शीतल खन्ना, प्रीति गिल आदि की सक्रिय भूमिका रही।

कलम अमृतसर के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर वेलकम होटल, आईटीसी और मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण का सहयोग मिला।

हर कोई जिंदगी में कुछ न कुछ
छिपाता है: संजीव पालीवाल

Sanjeev Paliwal

मैंने अपराधी की मनोदशा की जगह जो पीड़ित हैं, उन पर क्या बीती उसे लिखा। वे ऐसे दौर से गुजरते हैं कि कोई उनकी मदद के लिए सामने नहीं आता। न तो समाज, न ही परिवार। वे साथ में रहकर भी अकेले होते हैं। सबसे बड़ी मुश्किल पीड़ित के सामने होती है।" यह कहना है, क्राइम थ्रिलर लेखक संजीव पालीवाल का। वह प्रभा खेतान फाउंडेशन की ओर से अहसास वूमेन के सहयोग से आयोजित कलम मेरठ में अतिथि वक्ता के रूप में बोल रहे थे। आरंभ में उनका स्वागत अहसास वूमेन अंशु मेहरा ने किया। फाउंडेशन और अतिथि वक्ता का परिचय देते हुए उन्होंने इस बात पर संतोष जाहिर किया कि देश अब कोरोना महामारी के दौर से उबरने लगा है और अब आमने-सामने का संवाद संभव है। फाउंडेशन साहित्य, कला, शब्द, संस्कृति और महिलाओं को मजबूती दिलाने के अभियान से जुड़ा है। अपनी भाषा, अपने लोग वह मौलिक विचार है, जिसे बढ़ावा देने के साथ सम्मानित लेखकों, कलाकारों और साहित्य प्रेमियों को मंच उपलब्ध कराकर एक-दूसरे से जोड़ने व संवाद करने का अवसर फाउंडेशन कलम और ऐसे ही दूसरे कार्यक्रमों से करता है।

अतिथि वक्ता का परिचय देते हुए मेहरा ने पालीवाल के तीन दशकों के मीडिया उद्योग के अनुभवों का जिक्र करते हुए कहा कि एक चर्चित एंकर, स्टोरी टेलर और पत्रकार के रूप में देश भर में पहचान बनाने के बाद पालीवाल अब हिंदी के बेस्टसेलर उपन्यासकार के रूप में धूम मचाए हुए हैं। आपका नया उपन्यास पिशाच रिकॉर्ड बिक्री का कीर्तिमान बनाए हुए है। पहला उपन्यास नैना भी पिछले साल 2020 में ही रिलीज हुआ था, और उसने भी व्यापक प्रशंसा बटोरी थी। फिलहाल आप आज तक चैनल में वरिष्ठ कार्यकारी संपादक हैं। आगे के संवाद के लिए उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र से जुड़ीं सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य रीटा राणा को आमंत्रित किया।

राणा ने पालीवाल से पूछा कि आप पत्रकारिता जगत में इतने सालों से हैं, लेखन में आप कैसे आए? पालीवाल का उत्तर था, "हर पत्रकार एक लेखक होता है, लेकिन वह तथ्य लिखता है। जब हम उपन्यासकार बनते हैं तो कल्पना का सहारा लेते हैं। मेरी खातिर काफी समय से थी कि मैं कुछ ऐसा लिखूं जिससे समाज का मनोरंजन भी हो और जानकारी भी मिले।" पिशाच में हिंसा की पराकाष्ठा है। इसके पहले से आखिरी पन्ने तक यह जिज्ञासा रहती है कि अंत में क्या हुआ? क्या पिशाच में आपके जीवन से जुड़ी घटनाएं शामिल हैं? पालीवाल का उत्तर था, "जरूरी नहीं कि आप के साथ कुछ घटा हो। पिशाच जैसे सैकड़ों पिशाच हमारे चारों ओर हैं,

लेकिन हमारा समाज शत्रुमर्ग की तरह है। वह मुंडी नीचे दबा देता है। वह सोचता है कि इससे बात बाहर नहीं आएगी, दब जाएगी। लेकिन ऐसा होता नहीं है। पिशाच: एक फेसबुक पोस्ट, कई हाई-प्रोफाइल मर्डर में जो कहानी है वह फेसबुक पोस्ट सच्ची है। घटना का तानाबाना सच्चा है। समाज में ऐसी घटनाएं घट रही हैं।" बतौर लेखक क्या आपने अपराधी की मानसिक दशा की तह तक पहुंचने की कोशिश की? के उत्तर में पालीवाल ने कहा, "नहीं, मैंने उस दिशा में काम नहीं किया। मेरा वह मकसद नहीं था।"

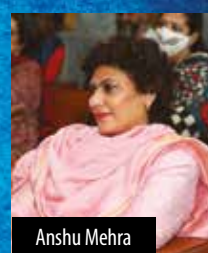
काली के किरदार का कोई पौराणिक संदर्भ है? के सवाल पर पालीवाल ने कहा कि नहीं। मैंने ऐसी कोई कोशिश नहीं की। इस नाम से जो छवि उभरती है, वह एक साहसी लड़की की छवि उभरती है। उसे बदला लेना है, उसके साथ जो जुल्म हुआ है। राणा के यह कहने पर कि समाज में जो दरिंदे हैं पालीवाल ने बतौर लेखक उनका पर्दाफाश किया है। पालीवाल की प्रतिक्रिया थी कि मैं क्राइम थ्रिलर लिख रहा हूं, जिसे आज कोई नहीं लिखना चाहता। मेरठ की इसी धरती पर एक से बढ़कर एक अपराध उपन्यास लिखने वाले लेखक हुए हैं। धीरे-धीरे वे खत्म हो गए। जबकि पूरी दुनिया में रोमांस के बाद सबसे ज्यादा क्राइम लिखा जा रहा है। अब क्राइम आधारित वेब सीरीज भी खूब बन रही हैं और दर्शक भी उन्हें खूब पसंद कर रहे हैं। लेकिन हिंदुस्तान में इन्हें लिखने वाले खत्म से हो गए। जबकि हर अखबार में हर पन्ने पर अपराध की खबर होती है। शायद हमारे जीवन में क्राइम इतना घटा कि लोगों ने क्राइम लिखना बंद कर दिया। लेकिन क्राइम लिखना एंटरटेनमेंट के लिए है। चेतन भगत भी रोमांस से क्राइम में आ गए। पिशाच आज के समाज की हमारे



Rita Rana



Anita Gupta



Anshu Mehra



Kalpana Grover



Garima Mithal

आसपास घट रही घटनाओं की कहानी है। आज बच्चे सोशल मीडिया पर जिस तरह से जीवन बिता रहे हैं उसकी जानकारी भी इसमें है।

एक सवाल के उत्तर में पालीवाल ने कहा कि आप किसी को पूरी तरह से नहीं जान सकते। हर कोई जिंदगी में कुछ न कुछ छिपाता है। पालीवाल ने अपने परिवार में नाटक, शिवानी, गुलशन नंदा, रानू की किताबों के उपस्थिति की भी बात की। उन्होंने कहा कि मैं उसी जमान में लिखता हूं, जिसमें हम आपस में बात करते हैं। यह ट्रेनिंग मुझे टीवी में मिली। पालीवाल पिशाच की कहानी भी संक्षेप में सुनाई और सवाल-जवाब सत्र में भी हिस्सा लिया। कार्यक्रम में उपस्थित छात्र नेमेश पांडेय के इस सवाल पर कि साहित्य के क्षेत्र में आलोचक बहुत हैं। ऐसे में आलोचनाओं का सामना कैसे किया जाए? पालीवाल का उत्तर था कि आलोचनाओं की परवाह न करें, अपने लेखन पर ध्यान दें। कार्यक्रम के आयोजन में गरिमा, अनिता गुप्ता, डॉ मृणालिनी अनंत, विनीत आनंद आदि ने भी सक्रिय भूमिका निभाई।

कलम मेरठ के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। हास्पिटैलिटी पार्टनर होटल क्रिस्टल पैलेस और मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण का भी सहयोग मिला।



Anant Vijay

गांधी-नेहरू परिवार का कोई भी व्यक्ति किसी विकसित निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव नहीं लड़ता बल्कि किसी पिछड़े इलाके में अपना देवत्व स्थापित करने की भावना से जाता है कि आप मुझे चुनिए मैं आपका उद्धार करूंगा।" यह कहना है अमेठी संग्राम के लेखक अनंत विजय का। विजय प्रभा खेतान फाउंडेशन और अहसास वूमेन द्वारा आयोजित कलम गुरुग्राम में बतौर अतिथिवक्ता संवादकर्ता डॉ शिल्पी झा के सवाल का जवाब दे रहे थे। कार्यक्रम का आरंभ अहसास वूमेन गुरुग्राम आराधना प्रधान के स्वागत वक्तव्य से हुआ। शिंजनी कुलकर्णी ने अतिथि वक्ता और संवादकर्ता का परिचय दिया।

विजय करीब ढाई दशक से पत्रकारिता और लेखन में सक्रिय हैं। आपने राजनीति, साहित्य और सिनेमा पर खूब लिखा है और देश भर में आपके लेखन के चाहने वाले मौजूद हैं। प्रसंगवश, कोलाहल कलह में, विधाओं का विन्यास, बॉलीवुड सेल्फी, लोकतंत्र की कसौटी और मार्क्सवाद का अर्धसत्य जैसी पुस्तकों से पहले से ही चर्चित विजय की नई पुस्तक अमेठी संग्राम: ऐतिहासिक जीत, अनकही दास्तान के



Shilpi Jha

यह भारतीय राजनीति का प्रस्थान बिंदु है: अनंत विजय

से सावधान था। प्रकाशक की लीगल टीम ने इसे देखा। शुक्ला परिवार पुराने कांग्रेसी हैं। पच्चीस-तीस हजार वोट उनके पास थे। बहुत समय से संघ और भाजपा के लोग उनके पीछे पड़े थे। वे स्मृति की मौजूदगी में मिलना चाहते थे। उसी दौरान गांधी-नेहरू परिवार से अपनी अंतरंगता जताते हुए वह बोल पड़े थे कि मैं राहुल, प्रियंका को मैं बचपन से जानता हूँ। मैं तो यह भी बता सकता हूँ कि प्रियंका के कहां-कहां तिल हैं। यह सुनना था कि स्मृति उठ गई और कहा कि जो व्यक्ति एक महिला का सम्मान नहीं कर सकता, उससे मेरी कोई बातचीत नहीं हो सकती। जिस क्षेत्र में एक-एक वोट की अहमियत हो वहां इतने वोटों की अनदेखी, बड़ी बात है।" विजय का कहना था, "अमेठी में राहुल गांधी की हार किसी कांग्रेस अध्यक्ष के पद पर रहते हुए चुनाव हारने की पहली घटना है। यह भारतीय राजनीति का प्रस्थान बिंदु है।"

विजय ने हर स्त्री की तुलना इंदिरा गांधी से किए जाने संबंधी सवाल का भी जवाब दिया और कहा कि स्मृति ने भी अमेठी में शुरुआती लड़ाई बहुत सीमित संसाधनों से लड़ी थीं। अमेठी में हार के बावजूद वह लगी रहीं और कई दशक से जो काम अधूरे थे वह पूरा करने में उन्हें केवल तीन साल लगे, योगी सरकार के आते ही वह काम हो गया। उत्तर प्रदेश में भाजपा के सत्ता में होने से कोई लाभ मिला के उत्तर में विजय ने माना कि सत्ता होती है तो सत्ता की अपनी हनक होती है। 2014 में एक पुलिस वाला जहां स्मृति को कह रहा था कि मैडम आप अपने काम से काम रखिए। वही 2019 में बदल चुका था। केंद्र में कांग्रेस के होने का जो लाभ 2014 में प्रियंका को मिला वही 2019 में स्मृति को मिला। प्रशासन के काम करने का अपना तरीका है। केंद्रीय मंत्री के तौर पर उनके प्रभाव का असर उनके कार्यक्षेत्र में था।

अमेठी संग्राम को लेकर राहुल गांधी और उनकी टीम से मिलने की कोशिश से जुड़े सवाल पर विजय का उत्तर था, "जब कांग्रेसी नेताओं को उनसे मिलने का समय नहीं मिल पाता, तो मुझे कहां से मिलता।" जायस क्षेत्र के एक नेता के हवाले से विजय ने अमेठी के कांग्रेसी कार्यकर्ताओं के इस डर कि उनका नेता कहीं पैसा



Dipali Bhasin



Aradhana Pradhan



Shinjini Kulkarni



Savita Jha Khan



Rajeev Kumar



Vandana Singh

कई संस्करण आ चुके हैं और यह पुस्तक अंग्रेजी में *Dynasty to Democracy: The Untold Story of Smriti Irani's Triumph* नाम से प्रकाशित हो चुकी है। सिनेमा पर सर्वोत्कृष्ट लेखन के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के 'स्वर्ण कमल' सम्मानित विजय दैनिक जागरण में एसोसिएट एडिटर हैं। संवादकर्ता झा दो दशकों से पत्रकारिता और शिक्षण से जुड़ी हैं और टाइम्स ऑफ़ इंडिया समूह की बेनेट यूनिवर्सिटी में एसोसिएट प्रोफेसर हैं।

झा ने विजय से पहला सवाल अमेठी संग्राम के जीवंत चित्रण पर स्मृति इरानी की प्रतिक्रिया को लेकर पूछा। विजय ने बताया, "किताब लिखने के दौरान मैंने स्मृति इरानी को किताब से संबंधित सूचना देकर केवल कुछ जानकारियां मांगी थी। ग्यारह मिनट का समय मिला था, जिसमें सत्रह सवाल पूछे थे। अमेठी संग्राम के प्रकाशन के दो महीने तीन दिन बाद उनके जन्मदिन पर जब मैंने उन्हें पुस्तक भेंट की तब तक इसका दूसरा संस्करण छप चुका था। कोई अलग उत्साह जैसा नहीं था।" अमेठी के शुक्ला परिवार से जुड़े प्रसंग पर विजय ने कहा, "इसे लिखते समय मैं अतिरिक्त रूप

न निकाल ले का जिक्र करते हुए कहा कि एक इतनी पुरानी पार्टी के लिए यह बहुत दुखद स्थिति है। अगर कार्यकर्ता खोफ में रहे तो इस पर क्या कहा जा सकता है। चुनाव में लिफाफा संस्कृति और पैसे की भागीदारी पर विजय ने कहा कि अमेठी में बस्ते की बंदरबांट का जिक्र मैंने खूब सुना है। विजय ने सवाल-जवाब के सत्र में भी भाग लिया और लता मंगेशकर और कश्मीर पर लिखी जा रही पुस्तकों के साथ ही संघ से स्मृति के संबंध, देश और अमेठी की सियासत, ओटीटी के नियमन और संस्कृति की राजनीति से जुड़े सवालों के उत्तर दिए और कहा कि संस्कृति की राजनीति में नया यह है कि वामपंथी राजनीति का जो पोषण पिछले सत्तर साल से हो रहा था, वह अब सात सालों से तोड़ा जा रहा है। अंत में आयोजकों की ओर से सविता खान झा ने अतिथि वक्ता विजय और संवादकर्ता झा को स्मृति चिह्न भेंट किया।

कलम गुरुग्राम के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट, हॉस्पिटैलिटी पार्टनर होटल रेडिसन ब्लू ग्राजा, दिल्ली एयरपोर्ट और मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण।



Vikram Sampath

The Story of a Man that History Cast Aside



K. Annamalai

Vikram Sampath, the historian and writer whose works such as *Splendours of Royal Mysore*, *My Name is Gauhar Jaan: The Life and Times of a Musician* and *Savarkar: Echoes From A Forgotten Past* have garnered acclaim, is now in the spotlight for his latest book, *Savarkar: A Contested Legacy*, which aims to provide a neutral, researched perspective to readers on the much-contested historical figure. **Prabha Khaitan Foundation**, under its **Kitaab** initiative, organised a session in Chennai to discuss the book—a session that marked the launch of the Foundation's activities in the City of Temples. The welcome address was delivered by two **Ehsaas** Women of Chennai, Vidya Gajapathi Raju Singh and Kaveri Lalchand. In conversation with Sampath was the state president of the Bharatiya Janata Party, K. Annamalai, and journalist Akhila Krishnamurthy.

"Whether or not you agree with whatever V.D. Savarkar did, there is no doubt that he was an iconic figure in Indian history," said Krishnamurthy at the commencement of the session. "This book really begins from Savarkar's conditional release from Pune's Yerwada prison in 1924, and sets the tone for chronicling the life of a man who witnessed many ups and downs and hardships. It is an account of a daring fighter who never



Akhila Krishnamurthy



Kaveri Lalchand



Vidya Gajapathi Raju Singh



Deepika Goyal

shied away from calling a spade a spade, and was passionate about the future of the nation."

What were Annamalai's first impressions of the book? "I enjoy the work of Indian historians. This book has hit a double century. Writing two whole volumes on Savarkar speaks about the calibre of the writer. Moreover, this is a historian's view of the man; it is not a fanboy's account." Why did Sampath choose Savarkar as his subject, wondered Krishnamurthy.

"Why not Savarkar?" asked Sampath. "Here was a man whose political philosophy is in ascendance today across India, but there is a curious lack of academic interest in him. The last biography of Savarkar was written in the 1960s, when he was still alive. History must be regularly re-evaluated, but while that has rightly been done for Gandhi, Nehru, Bhagat Singh and others, the same interest has not been shown in Savarkar. He was *persona non grata* in India history, and has been so under-evaluated that I thought something needs to be done. As Toni Morrison said, 'If there's a book you want to read, but it hasn't been written yet, then you must write it.' So I spent five years bringing a semblance of coherence to a complex figure."

History must be regularly re-evaluated, but while that has rightly been done for Gandhi, Nehru, Bhagat Singh and others, the same interest has not been shown in Savarkar. He was *persona non grata* in India history, and has been so under-evaluated that I thought something needs to be done

Why has Savarkar almost been eliminated from Indian history? "History has always been written

from a winner's perspective," remarked Annamalai.

"Savarkar has been demonised. Sampath has come in and given us a different perspective on the man, backed with evidence and logic."

In the Q&A session that followed, Sampath revealed an interesting anecdote. "C. Rajagopalachari had laudatory things to say about Savarkar, and conjecture has it that he may have even written a biography of the man. When Savarkar was released from jail and took over as president of the Hindu Mahasabha, in a public speech, Rajaji, who was one of Gandhiji's most trusted men, said that he had written

a biography of Savarkar, and had so much praise for him."

The illuminating session concluded with a vote of thanks by Raju Singh.

This session of Kitaab is in association with Penguin Random House and Ehsaas Women of Chennai



Debdata Bajpai

मेरी कविताओं में मेरे अनुभव हैं: देवदत्ता बाजपेयी

बचपन का शहर छूटता है
तो नाता खुद से ही टूटता है
जो कुछ भी समझते थे अपना,
वो कुछ भी बाकी नहीं
अब तो खुद को मैं खुद याद नहीं
शहर छोड़ा तो गलियां बदली
घर छोड़ा तो रिश्ते बदले
मैंने भेष अपना बदला
तो चेहरे अपनों के बदले...

कवयित्री देवदत्ता बाजपेयी ने कलम रायपुर & बिलासपुर के वर्चुअल सत्र में बतौर अतिथि वक्ता अपनी यह कविता सुनाई। प्रभा खेतान फाउंडेशन, अहसास वृमेन व अभिकल्प फाउंडेशन की आयोजन समिति की ओर से गौरव गिरिजा शुक्ला ने उनका संक्षिप्त परिचय और धन्यवाद दिया। औपचारिक स्वागत हयात रायपुर के महाप्रबंधक करण कपूर ने किया।

अहसास वृमेन की डॉ गरिमा तिवारी ने बाजपेयी का औपचारिक परिचय देते हुए बताया कि देवदत्ता बचपन से ही साहित्य से जुड़ गईं। आपका स्कूली दिनों का काव्यात्मक सफर अब पूरी दुनिया में फैल चुका है। अमेरिकी पत्रिका अर्बन कन्प्युजंस, पोएट्री.कॉम और स्टोरीजेन जैसे ऑनलाइन जर्नलों, वेबसाइटों में आपकी कविताएं छपती रहती हैं। बंगलुरु के 30 चुनिंदा कवियों के अट्टा गलट्टा पब्लिकेशंस से प्रकाशित संकलन कर्ण कविता में भी आपकी कविताएं शामिल हैं। देवदत्ता की कविताएं अर्बन सॉलेस से प्रकाशित स्टैप्स ऑफ लव में भी शामिल हैं। देवदत्ता 100 थाउजेंड पोएट्स फॉर चेंज आंदोलन से भी जुड़ी हैं। दुनिया भर में कई फिल्म फेस्टिवल्स में सराही गई रेमिनिस्सन्स ऑफ इथर फिल्म में देवदत्ता की 7 हिंदी कविताएं शामिल हैं। आपने 'गुड डे', 'आशीर्वाद', 'फॉर्च्यून', 'टीवीएस', 'टाइटन' और 'हाई वडर्स' जैसे ब्रांड की विज्ञापन फिल्मों के लिए गीत और पटकथाएं भी लिखी हैं। संवादकर्ता कनक रेखा चौहान साहित्य और संस्कृति में रुचि रखने के साथ ही लखनऊ अहसास वृमेन की सदस्य हैं।

चौहान ने देवदत्ता की पुस्तक किस्त किस्त जिंदगी की चर्चा की और कहा कि यों तो हम सभी किस्तों में ही जीते हैं, लेकिन देवदत्ता ने यह नाम इसलिए भी दिया कि इसके सात अध्याय—अधूरापन, समझौता, लगाव, खामोशी, सवाल, रुहानी और पहचान, में जिंदगी के सात सोंगों को समेटा गया है। देवदत्ता को उनके पुकारे जानेवाले नाम डेबी से संबोधित करते हुए चौहान ने पूछा कि आप बंगलुरु में रहती हैं, आपकी ऑफिस का सारा काम अंग्रेजी में होता है, किताब हिंदी या हिंदुस्तानी में है, मातृभाषा बांग्ला है, तो ये सब कैसे हुआ? देवदत्ता का उत्तर था, "मैं सभी से यह कहती हूँ कि हिंदी इज माई लव, उर्दू इज माई क्रश, बांग्लाई इज माई डेली लाइफ एंड इंग्लिश इज माई डेली ब्रेड। मम्मी बहुत गजलें सुना करती थीं, तो बचपन से ही, शायद वहां से शुरू हुआ हिंदी की तरफ झुकाव। हिंदी फिल्मों में तो थी हीं, हिंदी गाने भी पसंद हैं। मैं शास्त्रीय संगीत सीखा भी करती थी, दोस्त भी हिंदी भाषी थे, इसलिए हिंदी में लिखना बचपन से शुरू हो गया। मैं हिंदी में ही सोचती हूँ, हिंदी में ही खवाब देखती हूँ, इसलिए हिंदी में ही लिखती हूँ।"

चौहान के इस सवाल पर कि बचपन के अलावा जिस शहर में हम जवां होते हैं, जहां मकान मिलता है, वही शहर शायद हमें अजीब भी होता है, आपका अनुभव कैसा है? देवदत्ता का उत्तर था, "मुझे भी लगता है कि बंगलुरु ने शायद मुझे बनाया है। बचपन में स्कूल के बाद से मैं बंगलुरु में हूँ। मेरा सारा समय यहीं बीता है। यह मेरा कार्य क्षेत्र है, जो भी संघर्ष रहा है जिंदगी का यहीं रहा है, दोस्त भी यहीं हैं। मेरे प्रोफेसर, कविता के दोस्त, जिनसे बहुत कुछ सीखा, यहीं हैं। यह ठीक है कि मैंने अपना बांग्ला कल्चर अपने माता-पिता, परिवार के सदस्यों से सीखा, पर यह सही है कि

शहर बंगलुरु का इनफ्लूएंस मुझ पर ज्यादा है।" चौहान के अनुरोध पर देवदत्ता ने बचपन का शहर छूटता है कविता भी सुनाई। किस्त किस्त जिंदगी के हर अध्याय में शहर का जिक्र है, इसके पीछे आखिर क्या वजह थी? के उत्तर में देवदत्ता ने कहा, "बंगलुरु का मौसम मुझे बहुत पसंद है। यहां एक तरह की सुरक्षा है। आप अकेले घूम सकते हो, लेक के किनारे जा सकते हो या लव राइड ले सकते हो। अकेलापन यहां उतना महसूस नहीं होता क्योंकि यहां उतनी खूबसूरती है। ऐसा बहुत बार हुआ है कि मैं अकेली रास्तों पर चली हूँ, कई बार अपनी उलझनों को सुलझाने के लिए अकेले अकेले घूमती हूँ, तो मेरी कविताओं में मेरे अनुभव हैं, जो मैंने महसूस किया है। बंगलुरु मेरे दिल के बहुत करीब है।"

आपकी किताब की पहली किस्त अधूरापन है। उसकी एक कविता है खाली-खाली से दो कमरे, एक में मैं हूँ, एक मुझमें है... रहने दे अधूरापन ये भी तो जरूरी है, तो क्या है यह अधूरापन? यह अधूरापन जरूरी क्यों है? के उत्तर में देवदत्ता ने कहा, "अधूरापन जरूरी है इसलिए कि जब तक यह अहसास है तब तक आगे बढ़ने या कुछ करने की चाह रहती है। सब पूरा हो जाए तो फिर कहानी खत्म हो जाती है। मुझमें अधूरापन का भाव इसलिए भी ज्यादा है कि मैं बचपन से अकेली ही पली-बढ़ी हूँ। मेरा कोई भाई नहीं है, बहन नहीं है, तो एक अकेलापन रहा है। जब मैं बचपन में खेलने के लिए साथी ढूँढती थी, तो मम्मी पापा कहते थे संगीत सुनो, चित्र बनाओ। इसलिए मैंने संगीत को, चित्रकारी को साथी बनाया। आज के दौर में हर किसी की जिंदगी एक-दूसरे से अलग है, तो सबमें कहीं न कहीं अकेलेपन का भाव है। मुझमें भी वह भाव कभी कभी आ जाता है।"

दर्द में भी कुछ पल मुस्करा लिया करते हैं

जिंदगी यूँ ही तुम्हें हम गुनगुना लिया करते हैं...

देवदत्ता की इन पंक्तियों के साथ चौहान ने पूछा कि जब आपने इसे लिखा तो आपके दिमाग में क्या चल रहा था? उत्तर मिला कि सच बताऊं तो इसके पीछे एक छोटी सी कहानी है। मास्टर्स के दौरान मैं अस्पताल में भर्ती हुई थी, जिससे मेरे कॉलेज की अटेंडेंस घट गई। इसके बाद मैं फादर की ऑफिस के बाहर इस बात का अनुरोध करने गई थी कि मुझे परीक्षा में शामिल होने दिया जाए। उस समय कुछ लड़के वहां हंस रहे थे, तभी यह लाइन दिमाग में आई। मेरा सोचना है कि हर हालात में हमें खुश रहने की कोशिश करनी चाहिए। इसके बाद से मेरी ये लाइनें बार बार मुझे याद आती हैं। मुझे लगता है कि मुश्किल वक्त में भी मुस्कुराते रहना चाहिए और कोई एक ऐसा थॉट जरूर होना चाहिए जो आपको सहारा दे।



Gaurav Girija Shukla



Kanak Rekha Chauhan

समझौता करना क्या एक प्रयोग है, क्या समझौता कर लेने से ज्यादा खुश रहा जा सकता है? के उत्तर में देवदत्ता का कहना था कि मुझे लगता है कि समझौता करना पड़ता है, पर हमें यह चुनना चाहिए कि कहां पर हमें समझौता करना चाहिए, कहां नहीं करना चाहिए। जहां अपनी खुद की पहचान की बात आ जाती है, वहां समझौता नहीं करना चाहिये। लेकिन जहां थोड़ा बहुत समझौता कर लेने पर हम खुद कुछ सहज हो जाएं, खुद को और दूसरों को कुछ खुशी मिल जाए, तो वहां समझौता कर लेना चाहिए। चौहान के अनुरोध पर देवदत्ता ने समझौता किस्त से शर्में अब भी आती हैं कविता सुनाने से पहले कोलकाता के अपने बचपन के घर और प्रकृति, गंगा, पंछी, सांझ और आसमान को कुछ यों याद किया —

शर्में अब भी आती हैं
पंछियों के झुंड अब भी घर लौटते हैं
और उनके पंखों के शोर
अब तेज हैं इतना कि
उनके दिलों की फुसफुसाहट
कानों तक नहीं पहुंचती...

लगाव किस्त की एक कविता, जिससे लगता है कि आपने लगाव का पराकाष्ठा को पार कर लिया है, क्या किसी से इतना लगाव हो सकता है? पर देवदत्ता का उत्तर था, "मुझे लगता है किसी से इतना लगाव मुमकिन है। मुझे लगता है कि जब हम किसी इनसान से मिलते हैं तो उसकी कुछ छाप हम पर पड़ती जरूर है। अच्छाई या बुराई हम में आ जाती है।" देवदत्ता ने अपनी एक कविता के हवाले से मेड फॉर इच अदर को लेकर अपनी सोच बताई और सुनाया —

दोहराते हैं अंगुलियां तेरे नक्शे पे
तो पोरों को ये एहसास होता है कि
तू एक ही मिट्टी से तो बना है...

देवदत्ता ने अंधेरे, खामोशी और खामोशी से चाहने पर भी अपना विचार रखा। उन्होंने सोशल मीडिया के प्रभाव, प्यार, प्यार पर अपनी सोच, प्रोफेशन और विज्ञापन से जुड़े सवालों के भी जवाब दिए और अपनी कई कविताएं भी सुनाईं। एक कविता को उन्होंने गाकर भी सुनाया। देवदत्ता ने हर्षा, राहुल कुमार, अनीश, अपराजिता आदि श्रोताओं के सवाल के भी उत्तर दिए।

कलम रायपुर & बिलासपुर के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर हयात रायपुर और दैनिक जागरण की ओर से मीडिया पार्टनर नई दुनिया के साथ अभिकल्प फाउंडेशन और अहसास वृमेन का सहयोग मिला।



Mahbouba Seraj

A Woman's Strength in the Face of Terror in Afghanistan



Advaita Kala

The world has been in distress over the plight of the women of Afghanistan ever since the Taliban re-established its reign of terror. At the heart of the women's rights movement in Afghanistan has been Mahbouba Seraj, a voice of advocacy for the rights of Afghan girls and women. Seraj is the founder of the Afghan Women's Network. **Prabha Khaitan Foundation**, under its **Tête-à-Tea** initiative, organised an online session with Seraj, who joined her virtual audience from Kabul. The author and screenwriter, Advaita Kala, was in conversation with Seraj.

Kala observed that "Afghanistan is at the centre of global focus at this time, but not at the receiving end of global help." Seraj agreed with her, mentioning gunfire by the Taliban that had deeply scared adults and children alike. "It broke my heart to see how petrified the children were," she said. "What has happened to the value of life in this country of mine? Today on the streets of Kabul, a group of women were demonstrating against the Taliban's decision that women can no longer be ministers in the country. After all these years of struggle, women in Afghanistan are not prepared to accept that. Peaceful women demonstrators on the street were hit, a few were injured, and even tear gas was used."

"As a voice for women in Afghanistan, I would like to have a talk with the head and the decision-makers of the Taliban and get clear answers," continued Seraj. "For example, why was the head of Pakistan's Inter-Services Intelligence in Kabul? He should not be making decisions

for the people of the country. Afghans should be choosing for themselves. But we don't have a government, we don't have our banks open, there is no work and universities are not open. This is setting the ground for anarchy."

Seraj also spoke with sadness about India's role in Afghanistan's future. "As our neighbour, and as a country that has helped Afghanistan so much, I wish India had taken a stronger stance against what has been happening here. Our relationship is an old and amicable one, so I was hoping India would have been more involved in helping us now."

It is the younger generation that I feel the most concern for. They were born and brought up in complete freedom; they could go to schools and cafes without worrying about anything. Now they won't understand why they can't do certain things anymore. Our agony, fear and problems are huge. If things continue as they are now, we will lose Afghanistan

With grief in her voice, Seraj spoke about the Taliban's promise of an inclusive government, which has not been acted upon yet. "It is not just the lives of the women that are important; the men and children matter too. It is the younger generation that I feel the most concern for. They were born and brought up in complete freedom; they could go to schools and cafes without worrying about anything. Now they won't understand why they can't do certain things anymore. Our agony, fear and problems are huge. If things continue as they are now, we will lose Afghanistan. And we don't want to lose our country. Where would we go?"

What have young girls whom Seraj has been talking to been saying?

"I have been erring on the side of caution, because their safety is important to me. They have not seen the atrocities of the past. They are determined to take their place in society. All they really want is to live in peace, go on with their education and make something of their lives."

This session of Tête-à-tea is in association with Kahalli



Jackie Shroff

सभी इनसान
एक से, सबका
खाना-पीना,
दर्द एक सा:
जैकी श्रॉफ

प्रभा खेतान फाउंडेशन की ओर से एक मुलाकात विशेष में इस बार हिंदी फिल्म जगत के प्रसिद्ध अभिनेता जैकी श्रॉफ शामिल हुए। फाउंडेशन और अहसास वूमेन की ओर से उनका स्वागत पूनम आनंद ने किया। फाउंडेशन का परिचय देते हुए आनंद ने संस्थापक डॉ प्रभा खेतान को याद किया और कहा कि फाउंडेशन प्रदर्शन कला, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य, लैंगिक समानता और महिला सशक्तीकरण को प्रोत्साहित करने वाले कार्यक्रमों के साथ ही देश में सांस्कृतिक, शैक्षिक, साहित्यिक और सामाजिक कल्याण योजनाओं को लागू करने वालों के साथ सहयोग भी करता है। महामारी के इस संकट भरे दौर में भी फाउंडेशन ने अपने संरक्षकों-प्रशंसकों की मनोबल बढ़ाए रखा और अपनी गतिविधियां और कार्यक्रम आभासी सत्र द्वारा जारी रखा।

अतिथि वक्ता का परिचय देते हुए आनंद ने कहा कि जय किशन काकू भाई उर्फ जैकी श्रॉफ अपने लाखों प्रशंसकों के बीच प्यार से 'जग्गू दादा' के नाम से मशहूर हैं। श्रॉफ केवल अभिनेता ही नहीं, एक्टिविस्ट और परोपकारी व्यक्ति भी हैं। फिल्म उद्योग में लगभग चार दशक से सक्रिय श्रॉफ ने 13 भाषाओं की 220 से अधिक फिल्मों में काम किया है। चार फिल्मफेयर पुरस्कार जीते हैं और हीरो, राम लखन, त्रिदेव, परिंदा, सौदागर, अंगार, सपने साजन के, गर्दिश, खलनायक, 1942: ए लव स्टोरी, रंगीला, अग्निसाक्षी, बॉर्डर और शपथ जैसी कई सफल फिल्मों में अपनी छाप छोड़ी है। सामाजिक कार्यकर्ता और पर्यावरणप्रेमी के रूप में श्रॉफ जैविक खेती से भी जुड़े हैं। आप थैलेसीमिया इंडिया के ब्रांड



Shinjini Kulkarni

एंबेसडर हैं और 'एचआईवी एड्स जागरूकता' और 'कन्या भ्रूण हत्या उन्मूलन' जैसे आंदोलनों का समर्थन करते हैं। वंचित वर्ग के बच्चों की शिक्षा और चिकित्सा के लिए धन मुहैया कराने के अलावा आपने पालतू राँकी की याद में लोनावाला के एक पशु आश्रय को एम्बुलेंस भी दान किया है।

आगे की बातचीत अहसास वूमेन नोएडा से जुड़ी कथक नृत्यांगना शिंजिनी कुलकर्णी ने की। कुलकर्णी ने श्रॉफ के सार्वजनिक जीवन के अनुभव और साक्षात्कार का जिक्र करते हुए कहा कि ऐसा कोई भी सवाल बचा नहीं है, जो पहले आपसे पूछा न गया हो। पर मैं जानना चाहती हूँ कि आप मुश्किल और सफलता को एक समान कैसे लेते हैं? श्रॉफ का उत्तर था कि इनसान के लेबल्स हैं, पर इनसान तो एक ही है। सबका खाना-पीना, दर्द एक सा है। कुलकर्णी ने पूछा कि जब आपने फिल्मों में काम शुरू किया तो एक्टिंग सीखा नहीं था, पर पहली फिल्म के प्लेटिनम जुबली हिट होने के बाद क्या कभी गंभीरता से सोचा कि यहां टिकना है तो सीखना होगा? श्रॉफ ने कहा, "सीखने का वक्त अभी आया है। उस समय तो वक्त नहीं मिलता था सीखने के लिये। जो भी सीखा सेट पर ही सीखा। तब बात करता था तो जेंडर का पता नहीं था। हिंदी में का, की, के का फर्क, वचन का फर्क नहीं पता था। शुद्ध हिंदी तो कुछ और ही है।" ब्रज के गीत नैन सो नैन नाही मिलाओ देखत सूरत आवत लाज... को याद करते हुए श्रॉफ ने कहा कि आजकल पुरानी विरासत आयुर्वेद, अथर्ववेद, ऋग्वेद सीख रहा हूँ। इन कथाओं, खानपान, चिकित्सकीय विज्ञान को सीखने की कोशिश कर रहा।



Poonam Anand



Vinti Kathuria

इस सवाल पर कि आपके घर में मिश्रित माहौल है, पर गाने आप शास्त्रीय संगीत, लताजी और आशाजी के सुनते हैं। ऐसा कैसे हुआ? श्रॉफ ने कहा, "मैं हिंदुस्तानी हूँ। मेरे माता-पिता, एक गुजराती हैं, मां सेंट्रल एशिया से हैं। धर्मपत्नी आधा बंगाल से हैं। मिश्रण अच्छा लगता है। संस्कृति हमारी यही है। सबसे पहले मां का पैर छूओ। मां अपना धर्म हैं, यही सीखा। पुराने गानों से प्रेम विविध भारती के चलते है। मां रात में गाना लगा देती थीं। उस समय हम सोते थे। ऐसे-ऐसे गाने आते थे। अचेतन में वह याद हो जाता है। ऐ मां तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी..." एक सवाल के उत्तर में श्रॉफ ने यह माना कि उनके और उनके भाई का नाम बड़े संगीतकारों के नाम पर हुआ। इसी तरह उनके बेटे टाइगर श्रॉफ का नाम जय हेमंत और बेटा का जय कृष्णा है।

श्रॉफ ने एक सवाल के उत्तर में यह माना कि कला उन्हें अपने साथ बहा ले जाती है। डांस हो या संगीत, पानी की तरह बहते चला जाना है। अपने आपको फ्लो में जाने दो। कुलकर्णी ने श्रॉफ के मेंटर देवानंद और सुभाष घई में समानता और अंतर से जुड़ा सवाल पूछा, तो श्रॉफ का उत्तर था, "देव साहब ने कई चीजें सिखाई थी। वह मेरे जैसे नए लड़के और जूनियर आर्टिस्ट को भी प्यार से समझाते थे। सुभाषजी ने भी समझाया। बड़ों से यह बातें सीखनी पड़ती हैं।" आपको रोज काम पर जाने के लिए कौन सी बात मोटिवेट करती है? श्रॉफ का कहना था कि हड्डि-पसली तो चलती रहनी चाहिये। मैं बचपन में पायलट बनना चाहता था, नहीं बना तो फिल्म में जहाज उड़ा लिया। बतौर एक्टर आप बहुत कुछ कर सकते हैं। सारे के सारे गामा को लेकर गाते चले... रोल मिल जाता है तो अपने को अभिव्यक्त करने का मौका मिलता है। भड़ास निकल जाता है। काम पर नहीं जाने से लगता है कि परिवार के एक हिस्से से नहीं मिला, ऐसा लगता है।

ओके कंप्यूटर से जुड़े सवाल का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि बच्चों को यह सीखना चाहिए कि आप कुछ भी करें, हर हाल में एक पौधा अपने पास रखना चाहिए। मम्मी आपको प्यार कर सकती हैं, पर आक्सीजन नहीं दे सकती। श्रॉफ ने पेड़-पौधों के महत्व पर सुनाया, पेड़ काटने कुछ लोग आये थे मेरे गांव में, धूप बहुत कहकर बैठे उसी की छांव में... इस सवाल पर कि आप पर्यावरण के मसले पर बहुत पहले से

जुड़े हैं, क्या आपको कभी यह नहीं लगा कि राजनीति में जाकर आप लोगों की, पर्यावरण की भी ज्यादा मदद कर सकते हैं? श्रॉफ का उत्तर था कि सभी मेरी मदद करते हैं। मैं हर जगह चला जाता हूँ। मुझे लगता है सबके साथ रहकर काम करूँ। मेरी सभी मदद करें। सब घराने का बच्चा बनकर रहना चाहता हूँ।

आपने चित्रहार में भी काम किया है, मिसिंग में भी काम किया है, इनके अनुभव? के सवाल पर श्रॉफ ने कहा कि मैं इन सभी कामों में दिल से जुड़ा था। जीवन में नमक, हींग, मिर्च, गुड़ सभी का टेस्ट होना चाहिए। बस यह ध्यान रखना होता है कि सबका मिश्रण सही मात्रा में हो। यह पूछे जाने पर कि कोई भी सफल व्यक्ति सबसे पहले अपने लिए घर और गाड़ी चाहता है, पर फिल्म और पैसा आने के बाद भी आपने चाली में रहना क्यों पसंद किया, इसकी क्या वजह थी? श्रॉफ का उत्तर था कि यह कम्युनिटी की बात थी। मैं बदलना नहीं चाहता था, अपनी आदतें। सब दोस्त यार थे। एक-दूसरे को हम जानते थे, पहचानते थे, तो कैसे छोड़ देता उन्हें। इसके बाद प्रोड्यूसर आकर बैठे रहते थे, पर हीरो बनने के बाद भी पांच साल तक वहां रहा ही। श्रॉफ ने इस दौरान रैपिड राउंड सवाल के उत्तर भी दिए। लता और आशा को देवी मां कहा। राष्ट्रीय पुरस्कार या बॉक्स ऑफिस हिट में राष्ट्रीय पुरस्कार को चुना। बिग स्क्रीन या ओटीटी के बीच वह बिग स्क्रीन के पक्ष में गए।

सवाल-जवाब के सत्र में अर्चना डालमिया के सवाल पर श्रॉफ ने अपने पिता के ज्योतिष ज्ञान का विस्तार से उल्लेख किया और कहा कि मुझे ज्योतिष पर यकीन है। रंगीता ग्रेवाल के उत्तर में उन्होंने किंग अंकल के अपने रोल को यादगार बताया। अमिताभ भगेल के उत्तर में उन्होंने योग, प्राणायाम पर बल दिया और संस्कार तिवारी, दीपा मिश्रा आदि श्रोताओं के सवाल के भी उत्तर दिए। अपने जीवन को श्रॉफ ने जो मिल गया उसी को मुकद्दर समझ लिया गाने से व्यक्त किया और ये रात अमार तोमार... गीत भी गुनगुनया। धन्यवाद विनती कथुरिया ने दिया।

एक मुलाकात विशेष के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट



Akhlaque Ahmad Ahan



Anisur Rahman

खुसरो दरिया प्रेम का... लफ़्ज़ की एक शाम, सूफी शायर के नाम

खुसरो दरिया प्रेम का
सो वाकी उलटी धार
जो उबरा सो डूब गया
जो डूबा सो पार...

की संगीतमय प्रस्तुति के साथ **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से आयोजित लफ़्ज़, अपनी भाषा, अपने लोग वर्चुअल कार्यक्रम में अतिथि वक्ता प्रोफेसर अखलाक अहमद अहान के साथ गुफ्तगू की अंग्रेजी और उर्दू के कवि, अनुवादक, पूर्व प्रोफेसर अनीसुरहमान ने। विषय था 'खुसरो दरिया प्रेम का'। हुमा मिर्जा ने अतिथि वक्ता अहान,



Huma Khalil Mirza

संवादकर्ता अनीसुरहमान और फाउंडेशन की गतिविधियों के बारे में बताया और अमीर खुसरो का बेहद उम्दा, पर संक्षिप्त परिचय देते हुए संवाद की शुरुआत की।

अनीसुरहमान ने कहा कि खुसरो को गुजरे हुए कोई सात सौ बरस होने को आये हैं। उन्हें इतनी मुद्दत तक याद करने और उन पर गुफ्तगू किए जाने के अपने मायने हैं, यह कोई गैरमामूली बात नहीं है। खुसरो हमारे सामने कई रंग और रूप में नजर आते हैं। शाइर, मौसिकार, दरबारी, सलाहकार, इतिहास संजोने वाले, पहेलियां बुझाने वाले, कव्वाली के दाता, सितार के आविष्कारक,

सूफी साहित्य के रसिया और सबसे बढ़कर खुद एक सूफी मनुष्य। खुसरो के उत्तर प्रदेश के पटियाली में 1253 और उसी इलाके के सोरों गांव में 1532 में तुलसी के पैदा होने का जिक्र करते हुए अनीसुरहमान ने कहा कि दरअसल खुसरो हमारे बुनियादी सरोकार हैं। वह सूफी संसार के साथ एक पूरी परम्परा के अमानतदार, संस्कृति के प्रतीक और मुकम्मल आदमी की मिसाल के रूप में सामने आते हैं। वह 20 साल की उम्र में वह दिल्ली सल्तनत से जुड़ गए। 40 साल की उम्र में वह अमीर का रुतबा पा गए। सात सुल्तानों के साथ वह एक सलाहकार और रणनीतिकार के रूप में तो जुड़े ही रहे, साथ ही अपने शेख पीर मुर्शिद हजरत निजामुद्दीन औलिया के साथ भी उनका लगाव था। क्या जिंदगी पाई थी खुसरो ने। अगर वह आज होते तो हम उन्हें करियर डिप्लोमेट कहते। उन्होंने —

अम्मा मेरे बाबा को भेजो कि सावन आए...

छाप तिलक सब छीनी रे मोसे नैना मिलाइ के...

सकल बन फूल रही सरसों...

बहुत कठिन है डगर पनघट की...

खुसरो पाती प्रेम की...

खुसरो सरीर सराय है...

के जिक्र के साथ अहान से पूछा कि इतने विविध रूपों, रंगों के बीच हम खुसरो को कैसे देखें, कैसे समझें, कहां देखें, उन्हें कैसे पहचानें?

प्रोफेसर अहान ने उत्तर में कहा कि आपका सवाल मुश्किल भी है, आसान भी। खुसरो वर्सटाइल जीनियस हैं। उन्होंने एक शेर पढ़ा, जिसका अर्थ था — मैं तुम्हारी शख्सियत को सिर से पांव तक देखता हूं, जहां नजर ठहरती है तुम्हारे करिश्मे का मुरीद हो जाता हूं। रूमी, सादी, हाफ़ी, मौलाना का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि सबने किसी एक या दो ही विधा में लिखा, पर खुसरो ने ग़ज़ल के साथ पांच दीवान लिखा। खुसरो खमसा के भी नजीम शायर हैं। तारीखी मसनवियां भी खुसरो ने लिखी। एक मसनवी है, जो अपने तर्ज की पहली और आखिरी मसनवी है, जिसमें वे हिंदुस्तान की तारीफ करते हैं। वे कहते हैं कि आदम को जन्नत से जमीन पर हिंदुस्तान में ही उतारा गया। यहां के फूल, पौधे, हुस्न, औरतों सब पर वह लिखते हैं। यहां के पंडितों के बारे में वह कहते हैं, हर पंडित अरस्तू की तरह अक़्मंद हैं, आलिम हैं। वह हिंदवी शायरी भी रचते हैं। खुसरो पटियाली में पैदा हुए। ब्रज, अवध, मुल्तान में रहे। वहीं उन्होंने कव्वाली को ईजाद किया। खुसरो ने नाइक के मकाम तक पहुंचे। साजों के साथ भी प्रयोग किए, नख के मैदान में भी उतरे। फारसी की पहला ग्रामर भी ईजाद किया। वह अमीरों के साथ भी थे। सूफी भी हैं, महबूबे ईलाही हैं। वाकियतन वर्सटाइल जीनियस हैं।"



Apra Kuchhal

हिंदुस्तान से खुसरो के ताल्लुक, रेखता की शुरुआत और जे-हाल-ए-मिस्कीं मकुन तगाफुल दुराय नैना बनाए बतियां... का जिक्र करते हुए खुसरो की रवायतें और अथेंसिटी पर प्रोफेसर अहान का उत्तर था कि हिंदवी कलाम की सदाकत खुसरो से मिल जाता है। ज़बानों में उनकी दिलचस्पी है। वह जहां भी गए वहां कि बोलियों में शेर कहा। फारसी कलाम को तरतीब दिया, पर हिंदवी कलाम की तरतीब का इशारा उस तरह नहीं मिलता। 1326 में बंबई में मिलता है। उन्होंने विस्तार से खुसरो पर अपने काम का जिक्र किया और उनसे जुड़ी एक ग़ज़ल, खयालाते खुसरो का जिक्र भी किया कि यह बुनियादी तौर पर किसी और ने लिखी थी, जो अपने आपको शागिर्द खुसरो कहते थे। बड़े शायरों के साथ यह हमेशा से होता है।

खुसरो से हजरत निजामुद्दीन औलिया के ताल्लुक और गोरी सोई सेज पर... के जिक्र के साथ अगला सवाल था, कि क्या उन्हें सूफी के तौर पर देख सकते हैं? प्रोफेसर अहान का उत्तर था कि खुसरो एक तरह शहजादे की तरह थे। उनके वालिद अमीर थे। उनके नाना अमीरे अरज थे। उनके ये चहेते नवासे थे। परवरिश शहजादों के बीच हुई है। शुरुआत की तमाम कमियां उनमें थीं। वे मौशिकी के रसिया थे। बज़्म में शामिल होते थे। खवातिन के साथ भी महफिलों में शरीक होते थे। पर बचपन से वह हजरत निजामुद्दीन के साथ थे। खुसरो बाद में रुहानियत की तरह बढ़ जाते हैं। जियाउद्दीन बर्नी, मीर खुर्द और निजामुद्दीन औलिया के बयान इस बात की तस्दीक करते हैं। खुसरो की लिगेसी दरअसल है क्या है? के उत्तर में प्रोफेसर अहान ने कहा कि खुसरो की ही तरह उनकी लिगेसी भी वर्सटाइल है। फारसी अदब है। उन्होंने हिंदुस्तान की फारसी दुनिया में पहचान कराई। हिंदवी, बोलियों को जबान की शक्ल में ले जाना उनकी बड़ी विरासत है। हिंदुस्तानी मौसिकी को हिंदुस्तानी सीमा से बाहर ले जाना खुरासानी मौसिकी को ले आना उनका बड़ा योगदान है। वतनपरस्ती यानी आइडिया ऑफ इंडिया की बात सबसे पहले अमीर खुसरो ने किया।

एक सवाल के उत्तर में उन्होंने मजहबी ज़बान को उपनिवेश की देन बताया। पहले केवल शासक और शासित का बंटवारा था। खुसरो की चीजें संजोने पर जोर देते हुए उन्होंने बहुत काम किए जाने की बात कही। संवाद के दौरान यह बात भी आई कि उर्दू, हिंदी दोनों ने खुसरो के साथ नाइंसाफी की है। महमूद शेरानी, स्पिंगर, नारंग, खालिक बारी के काम को बहुत गहराई से जानने की जरूरत है।

लफ़्ज़ के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। सूफीनामा का सहयोग मिला।

Reality and Fiction in a Doll's House

Ruchika Nambiar's vision as an artist is known to be unique. With the help of Studio Slip, Nambiar, who is also a writer and a graphic designer, has brought to life a close-to-reality installation: a miniature dollhouse for her minuscule alter ego, Little R. During a special virtual session of **Ehsaas**, Nambiar talked about the intricacies of architecture and design, and spoke about 'The Dollhouse Project', which was also the name of the session. Introducing the talk was Lopamudra Lahiri, corporate programmes adviser, **Prabha Khaitan Foundation**.

Nambiar, who was introduced to the audience by Praneet Bubber, **Ehsaas** Woman of Amritsar, took the audience through a fascinating visual journey of the many hats she has worn and the work she has done in the course of her career. Of these, the most riveting is The Dollhouse Project. "I had conceived of this back in 2015 but have only been able to properly realise it over the past one or two years. It is an interactive social media story set in a miniature parallel reality, and follows the life of Little R— my miniature alter ego—as she makes her way through the trials and tribulations of miniature life. For Little R's face, my own face was digitally sculpted based on photographs by the artist and sculptor, Manush John. Then it was 3D-printed."

"I wanted the Dollhouse Project to be a living, dynamic narrative," said Nambiar. "It is an experiment in editorialising the everyday, testing the line between reality and fiction. Where does Little R's reality overlap with mine? In the process of the project, I ended up inserting aspects of my reality into her world." These aspects include everything from Nambiar's bag and slippers to a stunning, tiny



Lopamudra Lahiri



Praneet Bubber



Ruchika Nambiar

replica of a photo album containing pictures from the artist's life. "The project is an exercise in hiding in plain sight, to test how much I can reveal of myself through a semi-fictional alter ego without editing out the mundane and depressing moments of my life. I have tried to make the story dynamic, so that it interacts with the real world in an active way." The manner in which Nambiar achieved this is unique, especially how Little R's life in 2020 in the course of the pandemic was depicted.

The virtual tour of the dollhouse was remarkable for the attention to detail that it revealed. For instance,

furniture pieces and the wallpaper that were picked out for the guest bedroom in Nambiar's house—a favourite room of hers—were painstakingly recreated down to the last detail in the miniature format.

"Despite it being a fictional space, I wanted the dollhouse to be rooted in the real world," said Nambiar. "So I brought in elements from the real world. There is a staircase picture gallery made up of pressed and framed leaves from my garden and Studio Slip's garden. All of the furniture in the house is created through laser cutting."

Nambiar also spoke of using social media to break the fourth wall. "Another special aspect of the house is that all the books you see in it are donated by actual followers of the project. Little R's story is just beginning. I hope she will become more real every day." The session ended with a vote of thanks by Lahiri.

I wanted the Dollhouse Project to be a living, dynamic narrative. It is an experiment in editorialising the everyday, testing the line between reality and fiction. Where does Little R's reality overlap with mine? In the process of the project, I ended up inserting aspects of my reality into her world

Of Mountains, Small Towns and Being a Child At Heart



Ruskin Bond

Ruskin Bond, whose books have fired imaginations and transformed the reading habits of several generations of children and adults, needs no lengthy introduction. The octogenarian author spoke about his inspirations, his inner child and more in a candid virtual session, organised by Young Presidents Organisation Mumbai Connect, in association with **Prabha Khaitan Foundation**. Bond was in conversation with Swati Agarwal, **Ehsaas Woman of Mumbai** and Udaipur and YPO member.

"In our suffocating concrete jungles, we have envied your green abode in the Himalayas," remarked Agarwal. "Is the writer's craft aided by the intimacy of small towns?" "A lot depends on the kind of writer you are and the place where you've grown up and spent most of your life," was Bond's reply. "I've seldom got the inspiration I need from city life. I've always found more to write about in small towns and villages. I've lived in London; sometimes you don't even know who your neighbour is. In a small town or village, you know everybody down the street or in the market. You also meet people whom you might not know as individuals if you encounter them in a big city. My Deoli and Shamli might be imaginative places, but they reflect the real places that I've lived in."

Agarwal pointed out that even in the age of technology, Bond's popularity with children continues, indicating his empathy for them. Is he still a child at heart? "Some people do still ask me to grow up," joked Bond. "So maybe I am still childish and naughty. But even when I began writing, I wrote about childhood and the problems children face. Like many writers, I had a difficult and lonely childhood. It helps writers be more sensitive to children's needs. Children are often

lonely; they need a friend or a companion. It is very important for parents to take an interest in their child. The basic elements of life haven't changed; even in the age of technology, children still long for friendship, a happy home and adventure."

"The best writers have always been those who have reflected the life of their countries," opined Bond. "Be it Tolstoy and Dostoevsky in Russia, Dickens, Hardy and Austen in Britain or Tagore and Premchand in India." He had a word of caution for young people keen to write and get published. "Without the digital medium, I would not be talking to you now, so technology definitely helps. But it's best not to become over-dependent on it."

As a lover and inhabitant of the hills, Bond was resolute about his stand on the destruction of the beauty of the mountains. "Everyone must enjoy the beauty of the Himalayas, but we must not overdo the tourism aspect," said the author. "The Himalayas have had a tremendous impact on my writing. In a way, I



Swati Agarwal

Best Saturday morning! We learned so much from Mr Ruskin Bond, who patiently answered all the questions. And Swati did a fab job. Thank you so much **Prabha Khaitan Foundation**, for making this magical event possible



— Shivani Mittersain,
Member, YPO Mumbai

always wanted to emulate my favourite authors and become the writers that they were. Now, as I am finally leaving my adolescence behind", said Bond with a twinkle in his eye, "I have so much to look back upon and write. I feel lucky to always have something to write about, and to never run out of ideas."



Rakeysh Omprakash Mehra



Reeta Ramamurthy Gupta

Filling a Vacuum and Inspiring a Generation

Rakeysh Omprakash Mehra worked on almost 200 ad films and a documentary before his first Bollywood directorial venture, *Aks*, made him wonder whether his calling lay with the big screen. Today, he is known as the man behind acclaimed films such as *Delhi-6*, *Bhaag Milkha Bhaag* and *Rang De Basanti*, which captured the heart of a young, patriotic generation. Reeta Ramamurthy Gupta, who has made Mehra's biography *The Stranger in the Mirror* come alive on page, is the author of *Rescript Your Life*. She is also the founder of the internationally acclaimed Red Dot experiment, an extensive study examining the impact of culture on communication. The guests tuned in for a virtual session of **The Write Circle Special**.

Organised by **Prabha Khaitan Foundation**, the

session was opened by Sshradha Murdia, **Ehsaas** Woman of Udaipur. In conversation with Mehra and Gupta was Rishma Gill, **Ehsaas** Woman of Chandigarh. Gill began the session with a question for Mehra: was his recent memoir, *The Stranger in the Mirror*, the result of an organic process of notes collected over the years? "I had never gone to film school or assisted anybody, so I did not know what cinema was, even though I had already made my first film. I started reading about my favourite films. When I used to travel to London a lot for my advertising films, I found a treasure of cinema history, thousands of books, in the basements of bookshops. But when I came back home, books about filmmakers or what their thoughts were behind their films were few and far between. So I felt a gap. I never found



Rishma Gill

works on my favourite films such as *Do Aankhen Barah Haath* or *Pyaasa*. As I built up a small body of work, I thought I should share it."

How did Mehra and Gupta meet and bring the project to life? "I was greatly inspired by *Rang De Basanti*", said Gupta. They met at the time of the 2009 general elections, when multiple surveys were talking about youth apathy towards the electoral process. "I felt that if there was one voice that could cut through that apathy and reach the youth, it was Rakeyshji's. I reached out to him to be a part of an event for the campaign, *It's Cool to Vote*."

The effects of cinema were evident right from Mehra's childhood. "We did not have a TV or a refrigerator, but we got a Philips mono player as a gift to my father. Records were too expensive; but one day, we got a long-playing record of the dialogue soundtrack of *Mughal-E-Azam*. We played it every day and night for the next year; it was magical and I would imagine the film. My father had also worked as an usher; somewhere deep down, he also knew a lot about films. For birthdays, he would take us for a movie – I saw the old classics like *Pakeezah* and *Do Bigha Zameen*. Those memories stayed with me; that's where the seed must have been planted."

As a child, did Gupta know she would be writing? "I used to write poetry, and was a huge fan of the tennis legend Steffi Graf; I had found a way to write 20 different poems for her. There came a time when *The Indian Express* contacted me to publish those poems. That is when I realized I enjoyed writing."

Mehra moved on to talking about his transition into the Hindi film industry. "When I got into advertising, I worked with a client based in Chandigarh, so I travelled to the city twice a week. I fell in love with Chandigarh; it is reflected in *Bhaag Milkha Bhaag* and *Mirzya*. When I finally arrived in Mumbai, for 7-10 years there was almost no work.



Sshradha Murdia

But my wife, Bharti was there for me. One day, I directed an ad film that won many awards. Finally, there was enough work for me. I did Amitabh Bachchan's first ad film. In fact, many years earlier I had asked Gulzar *bhai* to write a script for *Devdas* for me; 25 years later, he wrote for my first film, then he wrote *Bhaag Milkha Bhaag* for me. He is much more than a father figure."

According to Gupta, Mehra always lets the experts do their job. "He trusts all his artists 100%. I wanted to bring their stories to the fore. Their anecdotes enriched the book." "Filmmaking is a collaborative process," said Mehra. "A movie begins when the idea is born.

“When I used to travel to London a lot for my advertising films, I found a treasure of cinema history, thousands of books, in the basements of bookshops. But when I came back home, books about filmmakers or what their thoughts were behind their films were few and far between. So I felt a gap. I never found works on my favourite films such as *Do Aankhen Barah Haath* or *Pyaasa*. As I built up a small body of work, I thought I should share it”

I made *Rang De Basanti* because I was angry about the defence scam at the time. I was also interested in Aamir Khan's, A.R. Rahman's and Waheeda Rehman's reasons for working in and for the movie."

Mehra finally reminisced about his relationship with the legendary Milkha Singh. "I read his autobiography and planned a one-day trip to meet him. I ended up staying in Chandigarh for a week, and listened to his story again and again. He started trusting me, and shared his darkest moments with me. Even though he had many lucrative offers for the rights to his story, he gave them to me for a mere Re. 1. The relationship became

very deep; the film was the by-product of it."

A brief Q&A session followed, during which Mehra's 'Bond connection' came up. "Daniel Craig had auditioned for Bond and had also been cast in *Rang De Basanti*. But he had made it clear if his Bond audition came through, he would not be able to do my film, which is perfectly understandable. So that was the only 'Bond connection' I've had in my life." The session ended with Murdia thanking the two guests and the moderator on behalf of the Foundation.

The Write Circle Special is presented by
Shree Cement Ltd



Pawan Paharia

प्राथमिक शिक्षा के लिए बाल साहित्य चाहिए: पवन पहाड़िया



Prahlad Singh Jhorda

प्रभा खेतान फाउंडेशन की ओर से आयोजित आखर कार्यक्रम में अतिथि वक्ता के रूप में नागौर जिले के डेह गांव निवासी साहित्यकार पवन पहाड़िया ने शिरकत की, जिनसे प्रहलाद सिंह झोरड़ा ने संवाद किया। ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में पहाड़िया ने अपनी रचनायात्रा की शुरुआत के बारे में बताया कि वर्ष 1981 में माणक पत्रिका में साहित्यकार कल्याण सिंह राजावत के साथ मेरी रचना छपी। इससे राजस्थानी में रचना करने का मेरा उत्साह बढ़ा। इसके बाद मुझे वर्ष 1988 में लक्ष्मणदान कविया जैसे गुरु मिले, जिनके साथ राजस्थानी भाषा प्रसार संस्थान की स्थापना की और यह कार्य जारी है।

उन्होंने कहा, "राजस्थानी के वरिष्ठ साहित्यकार कन्हैयालाल सेठिया ने राजस्थानी भाषा में गीत लिखने की प्रेरणा दी। एक बार सेठिया जी ने एक 'हेलो' लिखा—'मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ और मेरा हेलो (राजस्थानी भाषा का अभियान) संभालने वाला कौन है? मुझे लगता है कि मेरे मन में ही रह जाएगी कि इसे संभालने वाला कोई नहीं है।'

इस पर मैंने बैठे-बैठे ही पत्र लिख दिया—
थे राजा राजस्थान रा, महे हां आठ करोड़
मायड़ मान दिलायस्यां, कहर्या मूँछ मरोड़

मेरा पत्र पढ़कर वे भालोटिया जी के साथ मेरे गांव आए और कहा 'मुझे देखना है कि मुझे ऐसा लिखने वाला कौन है।' वे मुझे आशीर्वाद देकर गए और मेरा उत्साह बढ़ाते रहे। इससे पहले मेरे गांव के मंदिर में हुए कार्यक्रम में राजस्थानी के वरिष्ठ साहित्यकारों ने अपने गीत प्रस्तुत किए थे जिससे मुझे राजस्थानी में गीत रचने की प्रेरणा मिली।

"2012 में मेरी पहली किताब आई बधाऊड़ौ। बधाऊड़ौ राजस्थान में बरसात से पहले जो पक्षी आते हैं, उनको कहते हैं। उनका आगमन इस बात की सूचना है कि बरसात आने वाली है। इस किताब में पर्यावरण, राजस्थानी संस्कृति, शिक्षा सभी तरह के गीत हैं जैसे—

रुखां नै मत बाढ़ बैरी,
रुखां नै मत बाढ़ छाती चीर'र इयां
आंतड़ियां मत नां बारें काढ़
रूप सुहागण औ मायड़ रौ
ओ गै'णौ सिणगार रै
मां नै विधवा कर रयो आंनै
काट-काट मत मार रै... "

झोरड़ा ने हरियाली के सम्मान की राजस्थानी परम्परा—
हिय हरिया हरिया रहे, हरदम हरिया हेर!

तु मुरधर रा कल्पतरु, तने किणविध भूलूँ कैर!! ...सुनाते हुए पूछा कि 2012 में ही आपकी नीतरयो नीर पुस्तक आई। इसका कोई विशेष कारण? पहाड़िया का उत्तर था, "बधाऊड़ौ के बाद थोड़ी बहुत बरसात हो जाती है तो तालाब, पोखर आदि में थोड़ी बहुत पानी हो जाता है तो उसको नीतरयोनीर कहा जाता है। इस पर मैंने सेठिया जी और कविया जी की प्रेरणा से किताब लिख दी। श्रावण का महीना राजस्थान के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

मुरधर हांसैं अर सरसावैं
काळा बादळिया लहरावैं
करसा खेतां तैजो गावैं
सावण आयौ रै...

साहित्यकार को लिखे बिना चैन नहीं मिलता। दो किताबें लिखने के बाद 12 किताबें बाल साहित्य की लिखीं, लघु कथाएं, व्यंग्य आदि लिखे। मेरे मन में केवल मायड़ भाषा की सेवा का उद्देश्य है। मेरी नीतरयो नीर की एक कविता सुनो—

औ देस है मोटा धोरां रौ
मतवाला मीठा मोरां रौ
ईसरजी वाळी गोरां रौ
सावण बरसैं लोरां रौ... "

आपकी रचना में ठेठ राजस्थानी शब्द मिलते हैं, इसका कारण? पहाड़िया का उत्तर था, "ठेठ राजस्थानी शब्द सीखने के लिए गांवों में बुजुर्गों के पास बैठना पड़ता है। उनके पास ज्ञान और नए-नए शब्द मिलते हैं। मैंने बड़े-बुजुर्गों के पास बैठकर कई चीजें सीखी हैं, जिनको मैंने साहित्य में लाने की कोशिश की। वे पढ़े हुए नहीं हैं लेकिन सभी बुजुर्ग अनुभव और ज्ञान के भंडार हैं।"

आपकी सार सतसई में एक भी दोहा ऐसा नहीं है, जिसमें वैण सगाई नहीं है, तो आप अपने दोहों में वैण सगाई का इतना ध्यान कैसे रखते हैं? पहाड़िया का उत्तर था कि मेरे गुरुजी ने बताया कि जब तक दोहों में वैण सगाई नहीं आएगी तब तक दोहों की उम्र अधिक नहीं रहेगी। वैण सगाई होगी तो दोहे लोकप्रिय रहेंगे। राजस्थानी के स्कूल-कॉलेजों के पाठ्यक्रम में आपकी कोई रचना शामिल हुई? के उत्तर में पहाड़िया ने बताया, "ग्रामीण परिवेश से जुड़ी मेरी 77 लघु कथाओं की एक किताब आई तीजो रूप। इसकी एक कहानी तकदीर महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय बीकानेर के बीए पाठ्यक्रम में शामिल है। इस कहानी में कन्या भ्रूण हत्या का विरोध किया गया है कि कैसे एक महिला इस विरोध में सफल होती है और तकदीर भी उसका साथ देती है।

राजस्थानी में बाल साहित्य लिखने की कोई वजह? के उत्तर में पहाड़िया ने कहा, "राजस्थान में राजस्थानी भाषा को मान्यता देने और द्वितीय राजभाषा बनाने की मांग है। बच्चा स्कूल जाने से पहले अपनी प्रादेशिक भाषा के 5000 शब्द सीख जाता है, लेकिन स्कूल, विशेषकर अंग्रेजी स्कूल जाने से बच्चा एक तरह से फंस जाता है और मायड़ भाषा के शब्दों को धीरे-धीरे भूल जाता है। इसलिए हम चाहते हैं कि राजस्थानी भाषा को मान्यता मिले और मिलनी तो है ही। इसलिए प्राथमिक शिक्षा के लिए बाल साहित्य चाहिए। अपने पास बाल साहित्य का भंडार होना चाहिए

ताकि सरकार को भी कई बार सोचना पड़े। इसीलिए मैं सबसे यही आग्रह करता हूँ कि बाल साहित्य का सृजन अधिक करें। बाल साहित्य की एक रचना सुनिए—

आओ गावां आखर गीत
अपणाय'र ल्यां जग ने जीत
इण में ग्यान भर् यो है पूरो
इण बिन जीवण साव अधूरो
आख्या इणस्यूं च्यार हुवै है
ठोठी मुड़दल बणज्यै सूरौ...

पहाड़िया ने जोर दिया कि राजस्थानी भाषा के लिए सरकारों की उदासीनता दूर करनी होगी। प्रादेशिक स्तर पर भी द्वितीय भाषा बनाई जा सकती है।

झोरड़ा ने अपनी रचना से राजस्थानी भाषा की पीड़ा को यों अभिव्यक्ति दी—
ताळौ जड़ियो क्यूं म्हारी वाणी रे
म्हारी औळख, हेमांगी रे
पीढवां री अमर निसाणी रे...

राजस्थानी भाषा में बाल साहित्य के प्रति चेतना और अधिकाधिक सृजन की चर्चा को इस आखर की उपलब्धि बताते हुए आयोजकों की ओर से प्रमोद शर्मा ने आभार प्रकट किया।

प्रभा खेतान फाउंडेशन और ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित आखर के प्रायोजक हैं श्रीसीमेंट।



Pallavi Aiyar

Places, through an Indian Lens



Chirag Patel

Journalist and author Pallavi Aiyar chanced upon a unique observation while moving from one country to another. Every time she moved to a new place, all her senses would be on high alert. She would walk around, keenly take in every street and symbol and listen to people talk. If she couldn't understand their words, she'd observe their body language and facial expressions instead. But all of this would happen only for about six months, after which the curtains would drop on her extra-alert senses and she'd stop paying as much attention to her new surroundings as she used to.

Aiyar shared many more such interesting observations while speaking at a virtual session of **The Write Circle** Jaipur. She is an award-winning foreign correspondent who has a large repository of writings to her name, ranging from fiction and travelogues to children's books and parenting manuals. The author was in conversation with Chirag Patel, co-founder and head of Mergers & Acquisitions at Sportz Village.

Inspired by Agatha Christie, a young Aiyar would use her school notebooks to write detective stories featuring herself and her friends. Because writing came to her as naturally as breathing, she continued wielding her pen all through her growing up years and eventually became a journalist who found herself working in China. Aiyar's first book, *Smoke and Mirrors*, is based on her time in China.

Talking about her latest book, *Orienting*, which is about the four years of her life in Japan, Aiyar said the title of the book has a twofold significance. First, it relates to finding her orientation in a new country and second, it alludes to the romanticised and aestheticised version of Japan we have in our minds, thanks to western influences.

The first few months in Japan were astounding for Aiyar. She saw five- to six-year-old children walking about in public places all by themselves. There's no concept of school buses in Japan, and kids are taught to use public transport independently, said the author. Often, Aiyar found herself wanting to go and ask the children if they needed help, until it sank in that they were absolutely safe on their own.

What was lost in Japan was almost always found. When Aiyar lost her wallet and was fretting about how she'd get all her travel documents back, someone told her to go to the police station to file a report for the missing wallet. The author said she'd initially laughed at the idea—growing up in India, going to the police for a lost wallet never crossed her mind. But in Japan, a nearby police station did indeed have her wallet because someone had apparently turned it in.

Kintsugi, the Japanese art of repairing broken pottery with powdered gold, fascinated Aiyer. The way the broken pieces were put together to make their flaws shine brighter made for a beautiful analogy for people and relationships, feels the author.

In all her travelogues, Aiyer makes it a point to write comparatively through an Indian lens to allow her readers to see the world through her perspective. The author said she likes to explore new places keeping diversity and plurality in mind. She's also curious about how women occupy spaces and how they make themselves heard in different cultures.

The Write Circle Jaipur is presented by Shree Cement Ltd, in association with Siyahi, Spagia Foundation, ITC Rajputana and Ehsaas Women of Jaipur



Urvi Bhuwania



Akanksha Sharma



Anita



Shiv Dutt



Manasvini Mathur



Lokendra Rathod



Vandana Mehta

"Such a scintillating session. Thanks, Pallavi and Chirag. It was fascinating to listen to your first-hand observations. Can't wait to read *Orienting*."

— Aparna Sahay



Mansingh Rathore



Indradan Charan

बाल साहित्य सृजन के लिए बाल मनोविज्ञान समझना जरूरी

बच्चे देश का भविष्य हैं और बाल साहित्य देश की अनमोल पूंजी होती है। इस ऊंचे स्तर के सृजन के लिए जिस असाधारण प्रतिभा की जरूरत होती है, वह मानसिंह राठौड़ 'मातासर' के पास है।" यह कहना है राजस्थानी के नामचीन समीक्षक डॉ इंद्रदान चारण का। वह प्रभा खेतान फाउंडेशन की ओर से आयोजित आखर पोथी में 'मातासर' की पुस्तक टाबरिया म्हें टाबरिया के विमोचन और विमर्श के दौरान बोल रहे थे। उन्होंने विस्तार से अपनी बात रखते हुए कहा कि राजस्थानी में अनुपातिक रूप से अन्य भाषाओं की तुलना में बाल साहित्य का सृजन कम हुआ है। सत्यदेव सवितेंद्र की बाल साहित्य की 9 पुस्तकों में राजस्थानी बालपणे रा गीत, मंगत बादल की कविता पुस्तक कुदरत रौ न्याव, डॉ. आईदान सिंह भाटी के बालगीत बहुत अच्छे हैं और बाल साहित्य की एक पुस्तक जल्द ही आने वाली है। जितेंद्र निर्मोही की बाल-काव्य जंगली जीवां की पछाण, विमला भंडारी का कहानी-संग्रह अणमोल भेंट, नीरज दइया का कहानी संग्रह जादू रौ पेन है। दीनदयाल शर्मा का निबंध संग्रह बालपणे री बातां, हरीश शर्मा का कहानी संग्रह सतोळियां, दमयंती जाडावत का कहानी संग्रह बुलबुल रा बोल, पवन पहाड़िया का कविता संग्रह नंबर वन आऊंला भी है। इसी तरह कृष्ण कुमार आशु का कहानी संग्रह धरती रौ मोल, मदन गोपाल लड्डा का बाल कथा संग्रह सपनै री सीख बहुत अच्छी बाळ साहित्य की रचनाएं हैं। आसा पारीक और राजस्थानी के नए लेखक बाल साहित्य पर काम कर रहे हैं।

चारण का कहना था कि बाल कविताएं बाल मन में खिलखिलाहट और स्वतंत्र भावों का संचार करने वाली होनी चाहिए। इतनी हल्की कि बच्चे उस पर रीझ जाएं और भारी नहीं लगे। गेय और तुकांत छोटी-छोटी कविताएं बाल काव्य की सफलता का रहस्य होती हैं, जिनको बच्चा खुद सुनता हुआ बोलने लग जाए। कवि राठौड़ की भाषा सरल, सरस और सहज समझ में आने वाली है। कवि की कविताओं में शब्द संयोजन, अक्षरों की आवृत्ति और कोमल ध्वनियां प्रभाव छोड़ती हैं। टाबरिया म्हें टाबरिया में 34 बाल कविताएं हैं। इन कविताओं के साथ जो चित्र दिए गए हैं, वो इन कविताओं को सहज बनाते हैं। ये कविताएं परिवेश को पूरी जगह देते हुए बच्चों को अंधविश्वास और भाग्यवाद से दूर रखती हैं। लोक जीवन, मूल्यपरक, सामाजिक मूल्यों के साथ तर्क क्षमता जगाने वाली रचनाएं बच्चों के लिए मनभावन हैं। टाबरटोळी पत्रिका के संपादक और बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा ने पुस्तक में अपने विचार देकर इसका महत्व बढ़ा दिया है। इस तरह के बाल साहित्य को प्राथमिक शिक्षा में शामिल किए जाने की जरूरत है। जब बच्चे को अपनी भाषा में पढ़ाई नहीं मिले तो उसको बिना रोशनी वाले कमरे में बंद करने जैसा है।

आरंभ में मदन सिंह राठौड़ ने प्रस्तावना पढ़ते हुए कहा कि राजस्थानी में बाल साहित्य लिखना बहुत मुश्किल कार्य है। इसके लिए लेखक को अपनी विद्वता, ज्ञान

और गर्व को एक कोने में रखकर बच्चों जैसा भोला बनना पड़ता है। बाल मन की समझ के साथ बच्चा बनकर जब कोई कविता हृदय रूपी कागज पर उतरती है, तो वह सार्थक रचना बनती है। सीमांत के सजग प्रहरी नवोदित बाल साहित्यकार 'मातासर' इस बाल मनोविज्ञान को भली भांति जानते हैं। यही कारण है कि उन्होंने टाबरिया म्हें टाबरिया में सरस और भावप्रवण कविताएं लिखी हैं। ये बच्चों के मन आंगन में किलोल करने वाली कविताएं हैं। आज जब मनुष्य अपनी संस्कृति और परंपरा की जड़ों को भूल रहा है, वह भौतिकता के आंगन में अंधा हो रहा है, उसको रास्ता नहीं सूझ रहा है। ऐसे मुश्किल समय में यह बाल कविताएं जमीन से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। बालपन के संस्कार भावी जीवन को सुंदर बनाने में कारगर साबित होते हैं। कवि राठौड़ ने इन कविताओं से बच्चों को जीवन के सूत्र दिए हैं। इसमें घर आंगन है, पारिवारिक संस्कारों का विकास है, प्रेम के तार हैं, जीवन का सार है। निश्चित रूप से भाव भाषा, शिल्प, विषय वस्तु और संप्रेषणीयता की दृष्टि से यह बाल पोथी बच्चों के लिए और राजस्थानी बाल साहित्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित होगी।

टाबरिया म्हें टाबरिया के लेखक 'मातासर' ने कहा कि मुझे लेखन के क्षेत्र में आगे बढ़ने में सोशल मीडिया से काफी मदद मिली। सबसे पहले वर्ष 2017 में 10 अक्टूबर को मित्र महेंद्र सिंह जाखली के कहने से कविता लिखी। उन्हें कविताएं अच्छी लगीं तो उन्होंने और कविताएं लिखने के लिए कहा। साहित्यकार महेंद्र सिंह छायाण ने मुझे सुझाव दिया कि आप बाल कविताएं लिखो। मैंने कहा कि राजस्थानी तो मुझे आती ही नहीं, इस पर उन्होंने कहा कि अपनी जो मारवाड़ी है, वही राजस्थानी है। साहित्यकार छायाण और संग्राम सिंह सोढा ने मुझे लगातार प्रोत्साहित किया। इसके बाद वरिष्ठ बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का भी मार्गदर्शन मिला। बच्चों के अखबार टाबर टोली में बहुत सारी बाल कविताएं छपीं। उन्होंने ही इस पुस्तक को तैयार करने में सहयोग दिया। इस पुस्तक की कुछ कविताएं इस प्रकार हैं—

सुबै-साम खेलण नै जावां,
आखै दिन म्हें धूम मचावां।
सगळा रै मन भावणियां,
टाबरिया म्हें टाबरिया।।

सगळा नै म्हें दौड़ करावां,
मा-बापू री झिड़की खावां,
बात-बात में रोवणियां
टाबरिया म्हें टाबरिया।।

आळस-वाळस म्हें नीं जाणां,
मात-पिता रो कैणो मानां।
पाठ प्रीत रा बांचणियां,
टाबरिया म्हें टाबरिया।।

मिसरी जेड़ी मीठी बोली,
कोर काळजै टाबर टोळी।
गीत प्रेम रा गावणियां,
टाबरिया म्हें टाबरिया।।

आयोजकों की ओर से ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन के प्रमोद शर्मा ने अतिथि वक्ता, लेखक, समीक्षक, प्रायोजकों और सहयोगियों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि आखर पोथी का उद्देश्य नए लेखकों की पुस्तकों पर चर्चा कर उन्हें बल प्रदान करना है।

प्रभा खेतान फाउंडेशन और ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित आखर पोथी के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट, हॉस्पिटैलिटी पार्टनर हैं आईटीसी राजपूताना



Madan Singh Rathore



Pramod Sharma



Pradakshina Pareek

The Untold Story of a Prostituted Woman



Rijula Das

The story of a prostitute has been narrated so often that it has become a predictable tale in our collective imagination. We often tell such a story the way we want to see it from where we stand in our middle-class lives, complete with all their confinements and expectations. This is what prompted Rijula Das to write her debut novel, *A Death in Sonagachhi*, to cross that threshold and narrate a "so-called predictable story in an unfamiliar but real way".

Das received a PhD in creative writing in 2017 from Nanyang Technological University, Singapore, where she also taught writing for two years. She is a recipient of the 2019 Michael King Writers Centre Residency in Auckland and the 2016 Dastaan Award for her short story, *Notes from a Passing*. Another of her short stories, *The Grave of the Heart Eater*, was longlisted for the Commonwealth Short Story Prize in 2019.

Das was recently a guest at a virtual session of **An Author's Afternoon** organised by **Prabha Khaitan Foundation**, where she was in conversation with Bharti Haralalka, an interior designer and wellness enthusiast. Modhurima Sinha welcomed them to the session on behalf of Taj Bengal.



Modhurima Sinha

Talking about *A Death in Sonagachhi*, Das said she was curious about the lives of women who lived in places where other women weren't allowed to go. People had come to associate their stories with tragedies

involving a lot of tears. Even if that was true to a certain extent, no human life was entirely tragic or full of misery, said Das. The people who lived in restricted areas also had families and children—they cracked jokes and visited shops in their neighbourhood, just like the rest of us. "As bad as life seems, it's still normal. Even horrible lives are normal," said the author.

Das didn't want the novel to be a "doom and gloom" read and wanted to infuse it with laughter and humour instead. The author said when people sold their bodies for a living, there was very little that remained. The two things she had seen people hold onto were their names and stories.

Das' story isn't about a person but rather about a place. Writing the book was a tough suit for Das because the author felt she couldn't talk about Kolkata and Sonagachhi in a one-person narrative. In her experience, Kolkata was a multifaceted city and one couldn't leave their home without becoming a part of somebody else's story. Unhappy with her first attempt at writing the novel, Das rewrote it. The result was a completely different book from the third chapter onwards.

The 2016 banknote demonetisation finds a place in Das' novel, where she speaks about how the phenomenon had affected the people living in Sonagachhi. In a cash-based economy, the author felt leaving out demonetisation wouldn't make her story seem real—her characters wouldn't be true to life anymore.

Das has always been very interested in public space, especially in Kolkata. She described the city as her artistic home. "I do not think I can write a book yet that is not set in the city of Kolkata or in Bengal. I have spent so much of my life walking on the streets of Kolkata... but Kolkata is also a stark city... one

that reminds you that not everybody who is in Kolkata feels they belong there," said the author.

Each confirmed guest for the virtual session was sent a food hamper from Taj Bengal.

An Author's Afternoon is presented by Shree Cement Ltd, in association with Taj Bengal, The Telegraph Online/My Kolkata



Bharti Haralalka



Guests were sent hampers from Taj Bengal

Of Mothers, Memories and Many Faiths



Karan Singh



Lady Mohini Kent Noon

Neither the moderator nor the guest of the recent virtual session of **Ek Mulakat Vishesh**, conducted under the aegis of **Prabha Khaitan Foundation**, need much of an introduction. Lady Mohini Kent Noon, who moderated the session, is well known as a journalist, playwright, filmmaker and human rights worker of Indian origin based in the United Kingdom, and is the founder-chairperson of the charitable organisation, LILY Against Human Trafficking. She is also the author of books like *The Black Taj* and *Nagarjuna: The Second Buddha*. Her most recent book, *Dear Mama*, is a fascinating collection of intimate letters written by eminent personalities to their mothers. Noon was in conversation with Dr. Karan Singh, a prince regent of Kashmir who was anointed Maharaja but went on to become a scholar, an author and even a legislator—he was a member of

both Houses of Parliament for several years. A letter he wrote to his mother is part of the collection that makes up Noon's book. The guests were introduced by Ehsaas Woman of Mumbai and Udaipur, Swati Agarwal.

Noon started the conversation by thanking Singh for his letter in her book, and asked him to talk about his own mother. "Without mothers, none of us would be here," remarked Singh. "So I must congratulate you for bringing out this marvelous volume. I learnt a great deal from my mother. She taught me beautiful *pahadi* folk songs, which have remained with me all my life.... She also taught me that although I was born a prince, I should always treat everyone with courtesy regardless of their status. This teaching has stood me in good stead at all times. The third thing I learnt from her was that I should always try to help the poor and the less privileged... she told me that the rich will always want to take your money, while the poor will be grateful for anything that you do for them, and I have found that to be true."

Why have women been treated badly in India where goddesses are worshipped, wondered Noon? "The gender balance recorded in our scriptures is not reflected in actual society," said Singh. "This is the result of centuries of social discrimination in our male-dominated society. India's Constitution, however, is very progressive and grants equal rights to men and women, and with the strong feminist movement and people like you working for human rights, gradually women in India are coming into their own. In the last 20-30 years, women have come up in almost every sphere. When we get the results of civil service examinations, women are invariably at or near the top."

Singh went on to speak of his memories of childhood in Kashmir. "My best memory is of lying on my back in Nishat Garden and looking up at the *chinar* tree. Kashmir has magnificent *chinars*. I could not have been more than six or seven, but I remember looking up in wonder. I went on to have several spiritual guides in my life. Each one of them has given me a separate mantra for life, so I have been blessed many times over. I felt no conflict in following these different spiritual paths; after all, we are all aiming at the same divine. I have been a part of the interfaith movement; as the Rig Ved says, the Truth is one, the Wise call it by many names."

For Singh, who wrote his thesis on the political thought of Sri Aurobindo, Lord Shiva is his personal deity. "This has got nothing to do with Kashmir at all, although there is a very complex branch of Indian philosophy called

Kashmir Shaivism. For me, the image of the dancing Shiva is remarkable; it shows the cosmos as it really is—never static." He went on to make a poignant point about the role of the guru. "Love and devotion are the only ways to approach the divine. Rumi would not have become what he did without Shams Tabrizi; Swami Vivekananda would not have been who he was without Sri Ramakrishna."

What does Singh think about the role of religion today? "The world's first parliament on religions was held in Chicago in 1893, and then again 100 years later in 1993. Since that time I have been heavily involved in it. The problem is that people will spend crores of rupees on places of worship, but nobody cares about 'interfaith'. We are still trying to bring people together just to understand one another and dispel the prejudices we have in our minds. Interfaith prayers, I have found, are remarkable; ultimately you realise that everyone is actually praying to the Almighty."

On the subject of Partition, Noon felt there wasn't enough awareness. Should we have been taught more? "We rightly celebrate our Independence," said Singh, "but we cannot forget the price that was paid. We were not violent against the British; we were violent against each other. One theory is that bringing up the past will cause more anguish, another is that we must face up to what happened. This is a vexed question." In Noon's opinion, "the trauma lived on in individuals who got no counselling or healing, and it passed onto the next generation. It is ironic that something that was a physical event is rarely talked about."

The guests went on to talk about India's transforming education system and debated on the contributions of Macaulay and Vedantic wisdom to it. "We need a combination of ancient wisdom and modern pedagogy in our education system now," said Singh. The session concluded with a vote of thanks by Agarwal for the stimulating insights offered by both guest speakers.



Swati Agarwal

Love and devotion are the only ways to approach the divine. Rumi would not have become what he did without Shams Tabrizi; Swami Vivekananda would not have been who he was without Sri Ramakrishna



Surendra Mohan Pathak

हर बार हमारा इम्तिहान होता है, हर बार पास होना पड़ता है: सुरेंद्र मोहन पाठक

कलम विशेष के वर्चुअल सत्र में इस बार अतिथि वक्ता थे अपराध कथा लेखक सुरेंद्र मोहन पाठक। प्रभा खेतान फाउंडेशन और अहसास वूमेन की ओर से डॉ गरिमा तिवारी ने अतिथि वक्ता, संवादकर्ता और श्रोताओं का स्वागत करते हुए कोरोना महामारी की भयावहता के बीच भी फाउंडेशन की गतिविधियों की चर्चा की और बताया कि इस खतरनाक समय में भी फाउंडेशन के कार्यक्रम रुके नहीं, और कला, शब्द, साहित्य, संस्कृति और महिलाओं को मजबूती दिलाने की फाउंडेशन की मुहिम अब भारत सहित दुनिया के तीस से भी अधिक देशों, शहरों तक पहुंच चुकी है। 'अपनी भाषा, अपने लोग' वह मौलिक विचार है, जिसे बढ़ावा देने के लिए फाउंडेशन कलम के अलावा एक मुलाकात विशेष, लफ़्ज़, आखर, पोथी, सुर और साज, द राइट सर्कल और किताब जैसे कई कार्यक्रम आयोजित करता है।



Anvita Pradhan

अतिथि वक्ता पाठक के लेखकीय सफर के 60 साल का जिक्र करते हुए तिवारी ने बताया कि आपकी पहली कहानी 57 साल पुराना आदमी वर्ष 1959 में मनोहर कहानियां में प्रकाशित हुई थी, जबकि पहला उपन्यास पुराने गुनाह नये गुनाहगार 1963 में प्रकाशित हुआ था। आपने अब तक 275 से अधिक उपन्यास, 45 से अधिक कहानी संकलन और 26 चुटकुला पुस्तकें लिखी हैं। आगे की बातचीत अहसास वूमेन पटना की अन्विता प्रधान ने की।

प्रधान ने तीन पीढ़ियों पर पाठक के प्रभाव का जिक्र करते हुए उनके बचपन और पसंदीदा पुस्तकों को लेकर सवाल पूछा। पाठक का उत्तर था, "मैं जब छोटा था तो पुस्तकें इतनी अधिक मात्रा में उपलब्ध न थीं। जहां मैं रहता था वहां सौ घरों में किसी एक के पास अखबार आता था, ऐसे में किताबें कहां से मिलती? किताबों की तुलना में सिनेमा

देखना आसान था। फिर भी मैंने काफी किताबें पढ़ीं। कोर्स के उपन्यास पढ़े। मामा के घर में उर्दू की किताबें पढ़ीं। उस जमाने में जो मिल जाता था, मन लगता था तो पूरा पढ़ जाते थे। लाइब्रेरी जाकर किताबें पढ़ लेता था। तब दुकानें उपलब्ध नहीं थीं। उपन्यास भी आज की तरह मोटे-मोटे या भारी-भरकम नहीं होते थे। सौ-सवा सौ पृष्ठों के उपन्यास मिलते थे, जो आधे घंटे-पैंतालिस मिनट में खत्म हो जाते थे। मेरी कजिन के कोर्स में निराला का उपन्यास 'निरुपमा' लगा था, वह पहला उपन्यास था जिसे मैंने पढ़ा था। अब अपनी इस उम्र में, अर्धेड़ावस्था में च्वाइस बनी कि नॉवेल खरीद कर पढ़ो।"

अपनी लेखन यात्रा का जिक्र करते हुए पाठक ने बताया कि मैं न तो हिंदी साहित्य पढ़ा था, न ही अंग्रेजी। फिजिक्स और मैथ्स का छात्र था। लाहौर में उर्दू पढ़ा था। मैं किसी एक भाषा का विद्वान नहीं। पर मुझे थोड़ी-थोड़ी उर्दू, पंजाबी, हिंदी, अंग्रेजी सभी आती हैं। इनसे मैंने अपनी भाषा बनाई, जो लोगों को पसंद आई। आम लोगों की भाषा और पसंद को लेकर लेखक को हमेशा जागरूक बने रहना चाहिए। मैं रीडर की राय को महत्व देता हूँ। मैं इसीलिए इतनी लंबी पारी खेल सका। इस सवाल पर कि क्या आप अपने उपन्यासों का कथानक पहले से ही सोचकर लिखते हैं? पाठक का उत्तर था, "हां इतनी लंबी राइटिंग के लिए खाका तो बनाना पड़ता है। मिस्ट्री नॉवेल आखिर यानी एंड से शुरू ही होता है और फिर आगे चलता है। यह आम लेखन से अलग है। दूसरे लेखक इस बात की परवाह नहीं करते कि उनके लिखे को पाठक पसंद करेगा या नहीं, पर हमें पाठकों की परवाह करनी पड़ती है। हमारे यहां सबकुछ रीडर ही है। हमें उसकी पसंद को अफोर्ड करना पड़ता है। हर बार हमारा इम्तिहान होता है, हर बार हमें पास होना पड़ता है।"

विमल सीरीज में हीरो जेल से भागा कैदी है। आपने मुजरिम को हीरो कैसे बना दिया? के उत्तर में पाठक ने कहा, "विमल को जब मैंने हीरो बनाया तो दो नॉवेल के बाद प्रकाशक और रीडर दोनों ने तौबा कर ली। पर मैं लगा ही रहा। मैं स्टीरियो टाइप कैरेक्टर को हटाना चाहता था। मर्डर मिस्ट्री का बेसिक फार्मेट एक है। एक हत्या होती है, चार पांच लोग सस्पेक्ट होते हैं। सस्पेक्ट की जांच करने वाला कोई भी हो सकता है। जासूस, पुलिस, पत्रकार, वकील, कोई भी....बस उसकी जांच का तरीका अलग होता है। जासूसी नॉवेल में आप आइडिया नहीं लगा सकते कि इसका अंत यही है। अपराधी यही है। फिर भी इस लेखन की एक सीमा भी है। यहां रिपिटेशन बहुत है। इस रिपिटेशन को रोकने के लिए ही मैंने विमल कैरेक्टर को बनाया। उसके किरदार की एक खासियत है कि वह हालात के साथ चलता था। एक जमाना ऐसा था कि कोर्स की किताबों की तरह मेरी किताबें पढ़ी जा रही थीं।"

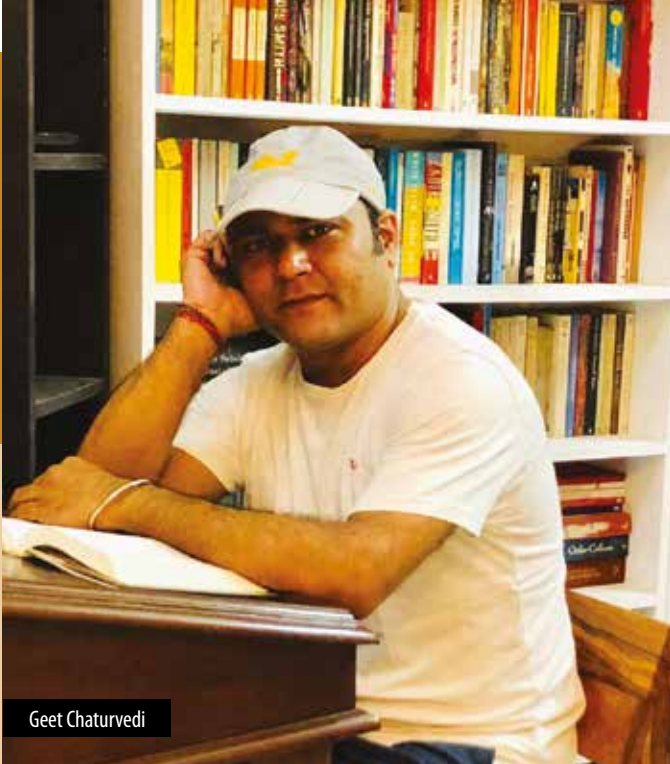
आपका फेवरेट सुनील है, पर पॉपुलर विमल है? आपका पसंदीदा उपन्यास कौन सा है? के उत्तर में पाठक ने स्वीकारा कि विमल के लिए बहुत पेंतरेबाजी है। कई बार दूसरों से नॉलेज लेनी पड़ती है। फिर भी किसी एक नॉवेल को फेवरिट कहना मुश्किल है। मां के लिए किसी बच्चे को प्रिय बच्चे को चुनना मुश्किल है। जोक्स से जुड़े सवाल पर पाठक ने कहा कि यह कोई कारोबारी काम नहीं है। यह मेरी अपनी पसंद की, शौक की बात थी। मुझे इतने जोक्स आते हैं कि मैं यह दावा कर सकता हूँ कि कोई मुझे ऐसे जोक्स नहीं

सुना सकता, जिसे मैंने सुना न हो। खुशवंत सिंह ने लिखा था कि हम फन लविंग नेशन नहीं हैं। जब हमारे देश को फन पसंद नहीं तो जोक्स कैसे पसंद करेंगे? फिर भी मैंने लिखा और वह बिका भी। आत्मकथा से जुड़े सवाल पर कि इसे लिखना कितना मुश्किल था? पाठक ने कहा कि आत्मकथा लिखना मेरे लिए मुश्किल ही नहीं, असंभव सा था। मेरे जीवन में भला किस को रुचि होती? मैं ऐसे ही सोचता था। पर 2017 के आसपास आत्मकथाओं का चलन सा निकला। तब खूब आत्मकथाएं छपीं। मेरे पब्लिशर का भी दबाव था कि मैं आत्मकथा लिखूँ। हार्पर कॉलेंस ने दबाव बनाए रखा। ज्यादा पैसे देने की बात भी कही। मैंने कहा कि कोशिश करूंगा, तब मुझे लगता था कि पचास पेज के बाद मैं हाथ खड़े कर दूँ, मना कर दूँ। पर मैंने एक बैठकी में ही तीन महीनों के दौरान 1200 पेज लिख दिए। पैसे भी ज्यादा मिले।

आप टाइप करते हैं कि हाथ से लिखते हैं के उत्तर में पाठक ने बताया कि मैं आज भी फाउंटैन पेन से लिखता हूँ। यह पर्मनेंट इंक नहीं है, फिर भी मुझे यही पसंद है। घोस्ट राइटिंग से जुड़े सवाल पर पाठक का कहना था कि हमारे ट्रेड में शिक्षा का बहुत प्रभाव है। पल्प किताबें ही बंद हो गईं। 1980 -1990 में घोस्ट राइटर को आगे बढ़ाने की कोशिश बहुत हुई। पर इस राइटिंग में लेखक को कोई लगाव नहीं था। एक दौर था, दीवानगी थी, अनपढ़ प्रकाशकों की कि हम अपने लेखक खड़े करेंगे। पर यह टेक्निक काम नहीं आई। यह चल नहीं पाई।

पाठक ने सवाल-जवाब के सत्र में श्रोताओं के सवालों के भी उत्तर दिए। सत्यभामा के सवाल कि आपके उपन्यासों में सत्यता होती है क्या? पाठक का उत्तर था कि हां, वरना इतनी कहानियां कहां से आएंगी? आज हम आप जिस समाज में रहते हैं वह क्रिमिनल माइंड है। निर्भया कांड पर कितनों ने किताबें लिखीं। आपको आंख, कान, नाक खुले रखने होते हैं। आप अलगजर्ज नहीं हो सकते। चौबीस

घंटे लेखक को जागरूक रखना होता है। विशाल सक्सेना के सवाल कि गैंग ऑफ वार कब आएगी? पाठक ने बताया कि कोरोना से काम रुका, फिर पेंविन की अपनी बाध्यता है। पर यह नवंबर में आ जाएगी। चंद्रधर मिश्रा के सवाल पर पाठक ने कहा कि अभी हाथ, पांव, दिमाग काम करते हैं। आज भी पांच- छः घंटे रोज लिखता हूँ। मानसिक तौर पर तैयार रहना होता है। वीसी सिन्हा के इस सवाल पर कि आपने किसी महिला को अपना हीरो क्यों नहीं बनाया? पाठक ने कहा कि नया कैरेक्टर बनाना ठीक नहीं होगा। जो काम आपको आता है, उसी को करते रहना चाहिए। महिला अपराधी को लेकर मेरा नॉलेज जीरो है। रीडर कई बार कह देता है कि आप मंगल ग्रह पर नॉवेल लिखो, तो यह तो संभव नहीं है। प्रभात के एक सवाल पर पाठक का उत्तर था कि तथ्यों को तोड़ना मरोड़ना सामान्य बात है। मैं मदारी नहीं हूँ। आजकल इंग्रोर करने का रिवाज है। बड़े-बड़े नेता ऐसी बातों को अनदेखा कर देते हैं। सुधीर सीरीज के उपन्यास के पेंविन से आने की बात पर पाठक ने कहा कि यह उपन्यास अभी आधा ही लिखा है, न जाने कैसे लोगों को गलतफहमी है कि यह छपकर आने वाला है।



Geet Chaturvedi

मेरे पास सपने हैं पर फूहड़ महत्वाकांक्षा नहीं: गीत चतुर्वेदी

हूँ। ज्यादातर लोग गलियों में आवागर्दी करते हैं। मैं अपनी लाइब्रेरी में आवागर्दी करता हूँ। पूरी किताब एक गो में मैं नहीं पढ़ पाता। पन्नों के बीच की गई आवागर्दी बहुत मजेदार है। यह जीवन के अनुभवों से अमीर बना देती है। मैं कविता और गल्प में काम करता हूँ, पर दर्शन मेरा पसंदीदा विषय है। अद्वैत, वेदांत में मेरी रुचि है।" राइटर्स ब्लाक से जुड़े सवाल पर उन्होंने कहा कि मैं एक आसान शिकार हूँ। मैं अक्सर रुक जाता हूँ। इसीलिए मेरी एक किताब का नाम है *अधूरी चीजों का देवता...* कई बार यह ब्लाक महीने भर का भी होता है, पर यह केवल नॉवेल के लिए है। उस दौरान मैं अखबार के लिए लेख, स्तंभ लिख रहा होता हूँ। जहाँ डेडलाइन है वहाँ तो मजबूरी है।"

चतुर्वेदी ने उस पार उपन्यास और अनुवाद से जुड़े सवालों के उत्तर भी दिए और तीसरी-चौथी भाषा में हुए अनुवाद को भी उपयोगी बताया। उन्होंने कहा कि इससे हमारी भाषा समृद्ध होती है। उसकी समावेशी छवि उभरती है। चतुर्वेदी ने अपनी आलाप में गिरह कविता भी सुनाई —

जाने कितनी बार जोड़े सुर,
हर आलाप में गिरह पड़ी है...

संगीत से संबंध पर चतुर्वेदी का उत्तर था, "मैं इस संसार में, ब्रह्मांड में एक संगीतमयी उपस्थिति हूँ। हम सबका जन्म नाद से हुआ है... मेरा लेखन एक अनुसुने संगीत का भाषा में किया अनुवाद है। मैं जो संगीत सुनता हूँ उसमें धुन होती है, शब्द नहीं होता है। अंदर जो अनाहत नाद है वह हमेशा बजता रहता है।" चतुर्वेदी ने अपनी सुसाइड बॉम्बर कविता के उल्लेख के बीच कविता को उपयोगितावादी दृष्टिकोण से देखे जाने पर ऐतराज किया और कहा कि कविता प्रकृति की तरह है। क्रिज सवालों के उत्तर में उन्होंने शृंगार से कालीदास; अधूरा प्रेम पर चार्ली चैप्लिन; हास्य पर शरद जोशी, हरिशंकर परसाई; मानसिक रोग पर वर्जिनिया वुल्फ; शारीरिक रोग पर फ्रैंज काफ़्का और ईर्ष्या पर लार्ड वायरन, मोजार्ट का नाम लिया। उन्होंने रूमी, कबीर, गालिल, कुंवर नारायण, नेरुदा, निर्मल वर्मा की अविस्मरणीय पंक्तियाँ पढ़ीं और पंचतत्व, मुश्किल समय, चार वचन सहित कई कविताएँ सुनाई और अपने लेखन और भाषा का श्रेय अपने माता, पिता और पत्नी भावना को दिया।

प्रभा खेतान फाउंडेशन की ओर से आयोजित कलम लंदन के सहयोगी हैं ब्रिटिश काउंसिल, यूके हिंदी समिति, वातायन और वाणी फाउंडेशन।

कलम लंदन के वर्चुअल सत्र में अतिथि वक्ता के रूप में कवि, लेखक गीत चतुर्वेदी ने शिरकत की। उनका स्वागत, कार्यक्रम परिचय और धन्यवाद पद्मेश गुप्त ने दिया। ऋचा जैन ने संवाद का आरंभ कवि अशोक वाजपेयी की चतुर्वेदी के लिए लिखी पंक्तियों से किया और उनकी सृजन यात्रा से जुड़ा सवाल पूछा। चतुर्वेदी का उत्तर था, "मस्तिष्क में सपने होते हैं और इनसे महत्वाकांक्षा पैदा होती है। सपनों को मैं मनुष्य के मानसिक जगत का हिस्सा मानता हूँ।" स्वप्न, स्मृति, कल्पना और यथार्थ को एक किताब से समझाते हुए उन्होंने कहा, "जो बंद है वह यथार्थ। यह उसी का काम है कि वह स्वप्न, स्मृति और कल्पना को बदले। महत्वाकांक्षा कई तरह की हो सकती है। एक महत्वाकांक्षा गांधी की भी थी और एक हिटलर की भी थी। इसीलिए मैं कहता हूँ — मेरे पास सपने हैं, लेकिन फूहड़ महत्वाकांक्षाएं नहीं हैं। मुझे ज्यादा कुछ नहीं चाहिए। मैं चाहता हूँ कि उम्र पूरी होने तक, मैं चार सुंदर पंक्तियाँ लिख लूँ। जब मैं मरूंगा, वही चार पंक्तियाँ मुझे कंधा देंगी।"

विदेशों में पल रहे किशोरों को हिंदी से कैसे जोड़ा जाए? के सवाल पर चतुर्वेदी का उत्तर था, "अनुमान और अध्ययन के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि चाहे भले ही पढ़ने की सामग्री कम हो पर बच्चों में भाषा और संस्कृति के प्रति अगर प्रेम पैदा किया जाए तो दिक्कत नहीं होगी। प्रेम पानी की तरह है, जो अपनी राह खुद चुन लेता है। हमें ऐसे लेखन की जरूरत है, जिससे बच्चे खुद से जुड़ जाएं। चीनी मूल की एक अंग्रेजी लेखिका के उदाहरण के साथ उन्होंने हिंदी के अपने पहले पढ़े उपन्यास डॉ शिवप्रसाद सिंह की *गली आगे मुड़ती है* का उल्लेख किया, जो किशोर वय के प्रेम-त्रिकोण पर आधारित उपन्यास है।

आप कितना, और क्या पढ़ते हैं? के उत्तर में चतुर्वेदी का कहना था, "मैं आवाज



Richa Jain



Padmesh Gupta



Divya Mathur



Titiksha Shah



Aruna Ajitsaria

Single At Seventy



Advaita Kala



Kiran Chadha



Apra Kuchhal

In January 2015, after 40 years of living a fulfilling married life, Dr Kiran Chadha suddenly lost her husband. All hell broke loose, and she spent the next six months brooding. But then a chance comment from a friend who said that the purpose of a woman's life ends when she loses her husband hit Chadha hard. So much so that she decided to turn back and start afresh. She began writing and never looked back. Her book *Dalhousie...through my eyes* is a pictorial history of almost two centuries. Spread over five hills, Dalhousie, with tall pine trees and lush green meadows surrounded by snow-clad mountains in the mesmerising Himalayas, is the author's home town.

Chadha shared all this and much more in the second episode of **Finding Freedom**, a session specifically curated around women who have undergone a journey of trials and tribulations in life. **Ehsaas Women** organised the session on the Clubhouse app. The session was hosted by author, screenwriter and columnist Advaita Kala.

Chadha was a civil servant who worked for nearly 36 years in the ministries of petroleum, public grievances, urban development, commerce, labour, defence production and women and child development. She's recognised as the first person from Dalhousie to qualify for the Civil Services. Kala has written screenplays for films such as *Anjaana Anjaani* and *Kahaani*. She also has two novels, *Almost Single* and *Almost There!*, to her name. She's now a contributing editor at India Ahead.

The theme of the discussion was Single at Seventy.

Apra Kuchhal, honorary convenor, Rajasthan and Central India Affairs, **Prabha Khaitan Foundation**, introduced the guests.

Chadha's latest book, *Magic Of Indian Weddings: Timeless Traditions, Sacred Customs*, talks about a strong sense of family values and religious sanctity—the two important factors that keep marriages together, according to the author.

Chadha pointed out that 99 percent of marriages stay alive in India compared to only 60 percent globally. She feels the pandemic and the new work-from-home norm can be a blessing in disguise if everybody learns to share their work and accommodate each other.

Talking about the age-old tradition of *kanyadaan* in Hindu marriages, Chadha said Hindu marriage prevents a woman from marrying from her own family—she has to change her *gotra* and go to a new family. All the rituals pertaining to marriage lead to a promise made by the bride and groom to generate virtuous progeny. Chadha doesn't want to change this tradition—the only traditions she's against are the ones that are detrimental to women and disrespectful, said the author.

Chadha has reinvented herself as a single woman. She admitted to missing her companion of 40 years during her lonely hours. But in such poignant moments, she composed poems. Although primarily about parting and desolation, all of these verses were strung in one note—surrendering to the supreme self, being able to put one's trust in Him and showing gratitude for presenting life with joy and happiness.

Dispellers Of Darkness

The word 'guru' in Sanskrit means dispeller of darkness. A guru or teacher guides us from the darkness of ignorance to the light of knowledge. With time, the connotations of the word 'teacher' have undergone several changes. Today, in a world where depression is rampant and children of all ages suffer from various mental illnesses, a teacher acts as a mentor, influencing children and giving their lives a direction to help them emerge from this dark phase and shine like a star.

To celebrate our teachers and mentors on Teachers' Day, **Prabha Khaitan Foundation's** latest initiative **Muskaan** organised a special session with Shreedevi Sunil, a professional storyteller, educator and founder of Talking Turtles Storytellers. Sunil facilitates workshops for parents, teachers, storytellers and organisations with the aim to encourage people to effectively use the world's oldest social tool—stories.

Sunil began the session by sharing her own experience of looking up to one of her school teachers, Mrs D'Souza. For many years, Mrs D'Souza had no inkling that Sunil aspired to be like her. It was only when Sunil decided to become a professional storyteller that she mustered enough courage to share this secret with her teacher. Since then, both of them have shared a friendship where their roles are fluid—Sunil sometimes donning the cap of a mentor herself.

Curating the session around mentorship, Sunil had two very interesting tales. The first was the mythological story of Ekalavya and Dronacharya that Sunil made refreshingly new using voice modulations and delving into the psychology of Dronacharya to explore what forced him to reject Ekalavya as a *shishya*.

Dronacharya's gratitude and allegiance towards the Pandavas and the Kauravas had compelled him to shun the diligent boy, who might have been his best student ever. Being a prince of the Nishad tribe, Ekalavya was not

deemed good enough to receive Dronacharya's tutelage. But even without Dronacharya's guidance, Ekalavya was able to become his true disciple through hard work and dedication.

Sunil's second story revolved around a young boy Teddy Stallard, who lost his mother to a terminal illness, and his teacher Mrs Thompson. When Mrs Thompson joined Teddy's class as a teacher, she found young Teddy always depressed, his work having innumerable mistakes. As a child, Teddy hadn't always been like this—he had been bright, friendly and forever ready to participate in school activities.

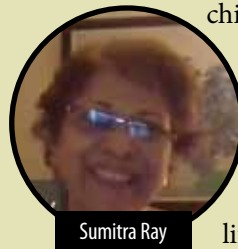
The story narrated how Mrs Thompson managed to regenerate Teddy's confidence and how Teddy went on to become successful later in life. It poignantly ended with Mrs Thompson being invited to a grown-up Teddy's wedding and given the seat designated for the groom's mother.

Both the stories Sunil shared showcased the significance of mentors in our lives. Without mentors, we would be like an anchorless ship. Teachers, on the other hand, also need to show humility and kindness. They should be able to transcend teaching school subjects and extracurricular activities to guiding their students in real life, understanding their problems and helping them arrive at a solution.

Talking about mentors, Sunil also mentioned Patricia Polacco's story *Thank You Mr. Falker*, which is about a young girl and a teacher who would not let her fail. This classic story is a must-read for all the mentors out there, said Sunil. The teachers who participated in the session also shared their own views about their noble profession, bringing forward unique viewpoints and enriching one another.



Shreedevi Sunil



Sumitra Ray



Natasha Ballal

'Anyone Can Help Save the Planet'

Few figures in India's wildlife and conservation landscape can boast of Natasha Ballal's contributions as a Nature educator and researcher. The senior education officer for the Worldwide Fund for Nature is an inspiration for people wishing to connect to the natural world and create a positive impact. It was fitting that she was the guest for the virtual interactive session organised by **Prabha Khaitan Foundation** under its **Muskaan** initiative.

After a warm welcome by Sumitra Roy, the student programmes adviser to the Foundation, Ballal started by explaining the meaning of key terms in her line of work. "Conservation has so many intersections and there is so much to talk about," said Ballal, as she

shared her screen with her viewers to illustrate her points. "The first thing to understand is biodiversity, which is the wide variety of natural life forms existing on the planet, all of which is essential to our survival. India is a 'mega-diverse' country, and has four of the world's 36 biodiversity hotspots. These places have a high range of diversity in terms of animal and plant life—but they have lost more than 70 percent of this biodiversity over the last decade. These areas have various mammals, amphibians, birds and a host of species endemic to India."

An instructive conversation ensued on India's big cats, starting with the national animal. "The Royal Bengal tiger is found across 19 states in India, and there are 52 tiger reserves in India. The country in fact has 70 percent of the world's tigers. The tiger is gorgeous, but it is very difficult to spot them as they camouflage so well. No two tigers have the same stripes; this helps with identification in conservation."

Ballal's interactive session held school-going audience



captive. "Did you know that both the spotted leopard and the black panther are common leopards? The latter has a dark coat because of the presence of melanin. The dark colouration is caused by a recessive allele. Then there is the white tiger, which also has a recessive gene that does not allow high amounts of melanin to be produced."

"Lions, unlike tigers, are not solitary cats," said Ballal. "Asiatic lions now can only be found in Gujarat's Gir forests. The elusive snow leopard is called the 'Ghost of the Mountains', and can be found in the Himalayan region. It is one of the world's most endangered cats."

Ballal went on to talk about several species, but her presentation also contained bad news and a warning for our world. "India is rich in biodiversity. But according to the WWF, the world has lost 68 percent of its mammals, fish, birds, reptiles and amphibians. It's lost 84 percent of its freshwater life, 10 percent of oceanic species and 90 percent of global wetlands. There are several steps we can take to protect our environment. We must spread awareness and be spokespersons for wildlife. We are all conservationists; anyone can help save the planet."

Ballal's inspirational session concluded with a fun quiz based on the points she had covered in her presentation.

This session of Muskaan is a project of Education For All, presented by Shree Cement Ltd, in association with WWF





Care for Your Mind

"You have never felt this way before, and the shock of the descent is traumatising you, but others have been here. You are in a dark, dark land with a population of millions."

— Matt Haig, *Reasons to Stay Alive*

English author and journalist Matt Haig's first non-fiction piece, *Reasons to Stay Alive*, is a memoir based on Haig's journey through depression and anxiety disorder. J.K. Rowling, the critically acclaimed author best known for the *Harry Potter* series, not only had depression but also felt suicidal during it. Michael Phelps, the most successful Olympian swimmer of all times, lived with attention deficit/hyperactivity disorder (ADHD) and used the swimming pool to "burn off excess energy".

Yes, mental illnesses are as real as a disease of the brain, heart or lung. According to the World Health Organization (WHO), around one in five children and adolescents around the world are living with a mental disorder. More than 7,00,000 people die by suicide every year, with one person dying by suicide every 40 seconds. Approximately 280 million people in the world suffer from depression. While there are effective treatments for mental illnesses, more than 75 percent of people in low-

and middle-income countries receive none.

Although mental health has been included in the United Nation's (UN's) Sustainable Development Goals (SDGs), social stigma, prejudice and discrimination surrounding mental illnesses still exist. Such discriminations often prevent people with a mental health issue from getting or even asking for the help they need out of fear of being labelled as unstable, eccentric or even potentially violent.

But what exactly is mental health? WHO defines mental health as more than merely an absence of mental disorders or disabilities. It's a "state of well-being in which an individual realizes his or her own abilities, can cope with the normal stresses of life, can work productively and is able to make a contribution to his or her community."

Observed for the first time on October 10, 1992, World Mental Health Day was initiated as an annual activity of the World Federation for Mental Health (WFMH) by the then Deputy Secretary-General Richard Hunter. Since then, WHO marks this day every year "to raise awareness of mental health issues around the world and to mobilize efforts in support of mental health."

However, with COVID-19, mental health has taken a



ARTWORK BY
SUDIPTA KUNDU

serious hit around the world. Latest available data from the United Nations Children's Fund (UNICEF) shows the disruption to routines, education and recreation, along with concern for family income and health, is leaving many young people feeling afraid, angry and concerned for their future. Domestic violence has surged and grief and emotional exhaustion are rampant. At-home parents, essential workers, unemployed individuals, communities of colour and children have been particularly affected.

UNICEF Executive Director Henrietta Fore said, "It has been a long, long 18 months for all of us—especially children. With nationwide lockdowns and pandemic-related restrictions, children have spent indelible years of their lives away from family, friends, classrooms, play—key elements of childhood itself. The impact is significant, and it is just the tip of the iceberg."

But there is a beacon of hope. The World Health Assembly, held in May 2021, bore witness to governments from around the world coming together and recognising the need to scale up quality mental health services across all levels. This year, WHO's World Mental Health Day campaign focuses on highlighting unique initiatives a few countries have undertaken to offer mental health care to their populations. It will also showcase positive stories on mental health that can serve as inspiration to others. The slogan for the campaign is 'Mental health care for all: let's make it a reality'. The WFMH has declared 'Mental Health in an Unequal World' as the theme for World Mental Health Day 2021.

With COVID-19, mental health has taken a serious hit around the world. Latest available data from the United Nations Children's Fund (UNICEF) shows the disruption to routines, education and recreation, along with concern for family income and health, is leaving many young people feeling afraid, angry and concerned for their future. Domestic violence has surged and grief and emotional exhaustion are rampant. At-home parents, essential workers, unemployed individuals, communities of colour and children have been particularly affected

Nurturing our mental health is essential to leading a fulfilling life. While difficult days are inevitable, we, at **Prabha Khaitan Foundation**, believe that we can get through even the toughest of times with each other's support. Let's say 'No' to social stigma against mental health, let's ask for help and be there for one another.

As Matt Haig writes in *Reasons to Stay Alive*, "You will one day experience joy that matches this pain. You will cry euphoric tears at the Beach Boys, you will stare down at a baby's face as she lies asleep in your lap, you will make great friends, you will eat delicious foods you haven't tried yet, you will be able to look at a view from a high place and not assess the likelihood of dying from falling." Care for your mind—one day, the light will shine.



Aparna Karthikeyan

Adopt a Best Friend, Don't Shop

the family from Mumbai. "For the longest time, we have only thought about 'buying' dogs; that house dogs must have lots of fur, and a breed name. I did too. It took me a while to realise that dogs aren't commodities to buy. A stray dog is the same as a German Shepherd or a Labrador Retriever or a Beagle. My greatest learning was how much stray dogs love human beings, how clean they are and how they are never out to bite people."

Karthikeyan wrote *Woof! Adventures by the Sea* so that her readers could experience what it really means to make friends with stray dogs and to adopt them. The book follows the adventures of a gang of dogs in the Mumbai monsoons who discover a mysterious package on the beach, out of which a new puppy emerges. The story was

inspired in no small part by the journey of Shingmo, who, as a puppy, was left on a beach sick and without food or shelter before Karthikeyan, out on a walk with Puchu, discovered her. The author went to read from a chapter called *A Wave So High*. "All of us enjoy the rain because we are sitting in our houses. Stray dogs, however, have to survive outside."

Karthikeyan's readings from her book and interaction with her young viewers were eye-opening for anyone wishing to learn more about dogs. She went on to make important points about how breeds like the Siberian

husky are ill-suited to India's climate; she also encouraged the enthusiastic children in her audience to adopt strays, and reminded them that adopting a dog "is a 15-year-commitment to a family member."

The author made a poignant observation towards the end: "Dogs have an incredible ability to be healers for their humans. They always sense your pain."

This session of Muskaan is a project of Education For All, presented by Shree Cement Ltd, in association with Red Panda

 @muskaan_pkf

Author and independent journalist Aparna Karthikeyan, who has written for newspapers and media portals about culture and livelihoods, is also an avid animal lover and a dog parent, something that has translated into engaging books for children, such as *Kali Wants to Dance* and *Woof! Adventures by the Sea*. The latter is the perfect amalgamation of Karthikeyan's storytelling abilities and her love for dogs. It was the crux of an interactive book-reading session of **Muskaan**, the latest project of **Educational for All**, an initiative of **Prabha Khaitan Foundation**.

Karthikeyan's dedication to dogs was evident from the moment she started to talk about *Woof! Adventures by the Sea*. "I am crazy about animals and Nature, and my book is about my two dogs, Puchu and Shingmo. I got to keep dogs of my own very late in life. My family did not allow it; when I turned 18 I adopted a Doberman-German Shepherd mix. My family had never seen or handled such a large breed before. She lived a happy life with us for 13 years. But it was only much later that I learnt how to care for stray dogs; they too sensed that I understood them. Now when we go for a walk, there is a crowd of dogs."

Viewers then got a glimpse of Puchu and Shingmo, both of whom are Indie dogs and moved to Chennai with

It took me a while to realise that dogs aren't commodities to buy. A stray dog is the same as a German Shepherd or a Labrador Retriever or a Beagle. My greatest learning was how much stray dogs love human beings, how clean they are and how they are never out to bite people



Ishpreet Singh



Sumitra Ray



Daksh Srivastava



Vaanya Bisht



Ahmed Raza

Celebrating Our Teachers



Sadeqa Rahman Siddiqui

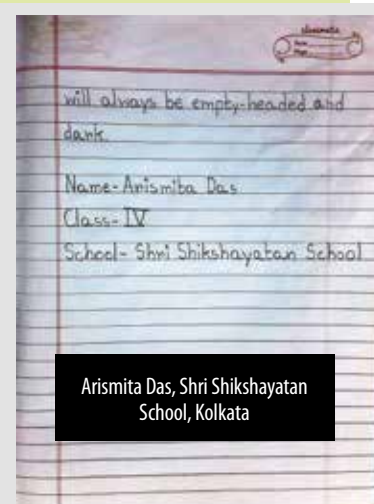
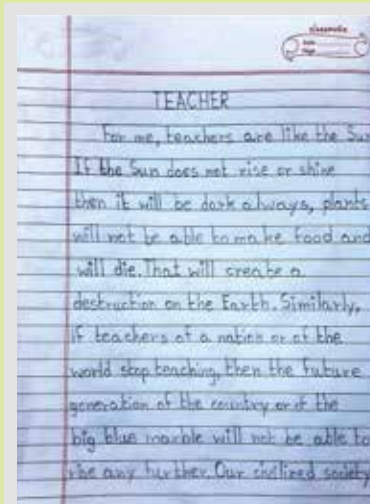
To celebrate Teachers' Day, Prabha Khaitan Foundation's latest initiative Muskaan organised an online pan-India contest for children in two groups. Group A comprised children in classes II and III, who had to create and send a small 30-second to 60-second video saying what the word 'teacher' meant to

them, while Group B included children in classes IV and V, who had to write a 100-word paragraph on the same topic.

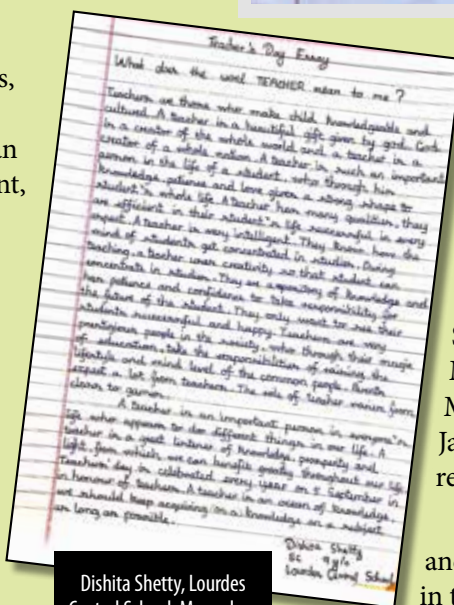
Shreedevi Sunil, founder and chief storyteller at Talking Turtles Storytellers, judged Group A participants. Group B students were judged by Sadeqa Rahman Siddiqui, head of the English department, La Martiniere for Boys, Kolkata.

The contest received an overwhelming response from all over India, with more than a thousand entries coming in. The judges had a tough time picking three winners from each group.

In Group A, or the video category, Joanna Anaya from Lourdes Central School, Mangalore, bagged the first prize, while Aharna Pal from Shri Shikshayatan School, Kolkata, and Hargun



Arismita Das, Shri Shikshayatan School, Kolkata

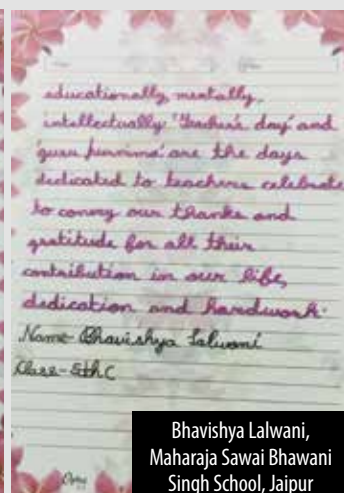
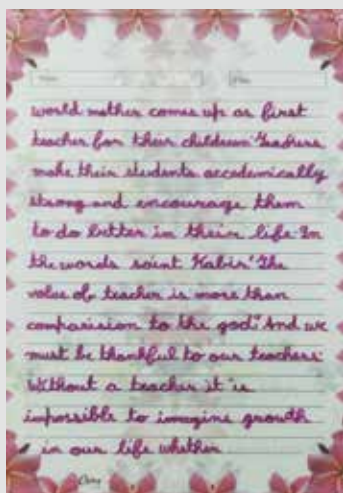
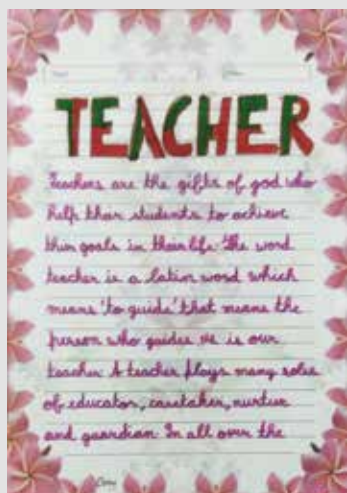


Dishita Shetty, Lourdes Central School, Mangalore

Singh Khanna from Sri Venkateshwar International School, New Delhi, became the first and second runners-up, respectively.

In Group B, or the writing category, Arismita Das from Shri Shikshayatan School, Kolkata, won first place. Dishita Shetty from Lourdes Central School, Mangalore, and Bhavishya Lalwani from Maharaja Sawai Bhawani Singh School, Jaipur, won second and third place, respectively.

The judges congratulated the winners and all the children who had participated in the contest for their effort. "All it takes is stories to open doors to many avenues," said Sunil.



Bhavishya Lalwani, Maharaja Sawai Bhawani Singh School, Jaipur

Speaking about her experience, Siddiqui said: "Children write with a passion and confidence that adults work hard to acquire. Reading these thoughtful and loving little snippets by our young authors has been a truly rewarding experience for me. As a teacher, I am humbled by the strength of affection, respect and creative skills shown by all our young participants. Well done!"

IN OUR NEXT ISSUE

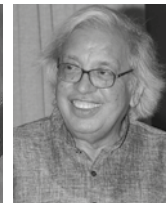
Guests	Events
Bhairav Lal Das	Aakhar Patna
Vikram Sampath	Kitaab Lucknow & The Write Circle Nagpur
Sruthy Sithara	Tête-à-tea
Manisha Kulshreshtha	Kalam Ranchi
Amit Kumar	Ek Mulakat Kolkata
Rasheed Kidwai	Kitaab Jaipur
Sujata Prasad	Kitaab Patna
Prem Prakash	Kitaab Canada
Abhilasha Pareek 'Abhi'	Aakhar Pothi Kitaab Rajasthan
Ashok Vajpeyi	Kalam Vishesh
Ravi Kishan	Ek Mulakat Oslo
Rita Jairath	Tête-à-tea
Vidhie Mukerjea	An Author's Afternoon Kolkata
Monika Halan	The Write Circle Jaipur
Kavita Kane	The Write Circle Oslo
Rajuram Bijarnia	Aakhar Jaipur
Ruchika Nambiar	Corporate Programmes
Ramu Damodaran	Muskaan
Savie Karnel	Muskaan
Rituparna Sengupta	Muskaan Durga Puja
Kinaesthetic Learning	Muskaan



Abhilasha Pareek



Amit Kumar



Ashok Vajpeyi



Bhairav Lal Das



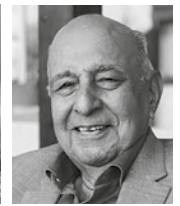
Kavita Kane



Manisha
Kulshreshtha



Monika Halan



Prem Prakash



Rajuram Bijarnia



Ramu Damodaran



Rasheed Kidwai



Ravi Kishan



Rita Jairath



Rituparna
Sengupta



Ruchika Nambiar



Savie Karnel



Sruthy Sithara



Sujata Prasad



Vidhie Mukerjea



Vikram Sampath

REACH US AT

Address: 1A Camac Court, 25B Camac Street, Kolkata - 700 016, West Bengal, India

The digital version of the newsletter is available at pkfoundation.org/newsletter

✉ newsletter@pkfoundation.org 📱 @FoundationPK 📺 @PrabhaKhaitanFoundation 📷 @prabhakhaitanfoundation

For private circulation only